









## खबरें फटाफट

## मादक पदार्थों की तस्करी में 5 माह से फरार एक आरोपी गिरफ्तार



## संजीवनी टुडे

चित्तौड़गढ़। जिले की बिजयपुर थाना पुलिस ने मादक पदार्थों की तस्करी के मामले में पिछले पांच माह से फरार चल रहे आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस अधीक्षक श्री सुधीर जोशी ने बताया कि एएसपी परबत सिंह के निर्देशन एवं डीएसपी ग्रामीण चित्तौड़गढ़ शिव काकाश टेलर के पर्यवेक्षण में अवैध मादक पदार्थों की तस्करी के संबंध में कार्यवाही एवं वांछित अपराधियों की गिरफ्तारी के अनुक्रम में रविवार को थानाधिकारी बिजयपुर पन्नालाल उनि मय जापा रणजीत सिंह, आकार, रामधन द्वारा थाना वैगु के एनडीपीएस एक्ट के मामले में पिछले पांच माह से फरार वांछित आरोपी भीलवाड़ा जिले के जितियास का मोहरा थाना बडलियास निवासी 29 वर्षीय गोविन्द पुत्र लक्ष्मण जाट को नियमानुसार गिरफ्तार किया गया। जिससे प्रकरण के संबंध में अनुसंधान जारी है।

## स्टंट करने वाले बाइकर्स पर कार्रवाई पानरवा पुलिस ने 11 बाइक्स को किया जब्त



## संजीवनी टुडे

फलासिया। उदयपुर जिले के पानरवा थानान्तर्गत क्षेत्र में सोमवार को स्टंट करने वाली पावर बाइक्स के खिलाफ कार्रवाई करते हुए अभियान चलाया थानाधिकारी अंकित सामरिया ने निर्देशन पर टीम द्वारा कार्रवाई करते हुए पावर बाइक्स द्वारा स्टंट करने वाले जगह का पहचान कर नाकाबंदी सर्कल क्षेत्र में गिरफ्तारी रखी इस दौरान नाकाबंदी के दौरान सर्कल में गस्त कर स्टंट करने वाली बाइक्स के खिलाफ कार्रवाई करते हुए 11 पावर बाइक्स जब्त किए पुलिस कार्रवाई में टीम ने शराब जब्त व स्टंट करने वाली 11 बाइक्स जब्त की।

## प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार वर्ष 2025 हेतु ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित

## संजीवनी टुडे

राजसमंद। प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार वर्ष 2025 हेतु ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। यह जानकारी देते हुए दीपेंद्र सिंह शेखावत सहायक निदेशक बाल अधिकारिता ने बताया कि महिला एवं बाल विकास मंत्रालय भारत सरकार ने दिल्ली, द्वारा प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार वर्ष 2025 हेतु मंत्रालय की वेबसाइट पर दिनांक 31 जुलाई 2024 तक ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। यह पुरस्कार 18 वर्ष तक की आयु के बच्चों को कला और संस्कृति, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पर्यावरण, बहादुर, नवाचार, शैक्षिक, सामाजिक सेवा, और खेल में उनकी उत्कृष्टता को लिए प्रदान किए जाते हैं। इस हेतु पुत्र बालक-बालिकाएं अपने दस्तावेजों के साथ नियत तिथि से पूर्व आवेदन कर सकते हैं ऑनलाइन आवेदन में किसी भी प्रकार की समस्या आने पर जिला कार्यालय, सहायक निदेशक, बाल अधिकारिता विभाग राजसमंद में संपर्क कर सकें।

## राज्य स्तरीय प्रो. पी. सी. महालनोबिस सांख्यिकी अवार्ड 2024 के तहत आवेदन आमंत्रित

## संजीवनी टुडे

राजसमंद। निदेशक एवं संयुक्त शासन सचिव आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय सांख्यिकी विभाग के पत्र द्वारा प्रख्यात वैज्ञानिक एवं सांख्यिकीविद प्रो. पी. सी. महालनोबिस के आर्थिक नियोजन एवं सांख्यिकी विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष की भांति उनक जन्मदिन 29 जून को आयोजित होने वाले 18वें सांख्यिकी दिवस पर जिले भर में विभिन्न विभागों, स्वायत्तशासी संस्थाओं, बोर्डों, निगमों में सांख्यिकी क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों को राज्य स्तरीय प्रो. पी. सी. महालनोबिस सांख्यिकी अवार्ड -2024 से सम्मानित किया जाना है। उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकतम दो अधिकारियों, कर्मचारियों के प्रस्ताव निर्धारित प्रारूप में विभाग को दिनांक 20 मई तक भिजवा सकते हैं।

## महाराणा प्रताप की 484वीं जयंती मनाने को लेकर हुई बैठक

## संजीवनी टुडे

उदयपुर। मेवाड़ क्षत्रिय महासभा संस्थान उदयपुर शहर कार्यकारिणी के अध्यक्ष चंद्रवीर सिंह करेलिया ने बताया की महाराणा प्रताप सिंह की 484वीं जयंती 2024 की युवा बैठक मेवाड़ क्षत्रिय महासभा संस्थान, मीरा मेरुपाट भवन, चित्रकूट नगर पर संपन्न हुई। वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप सिंह की जयंती प्रति वर्ष मेवाड़ क्षत्रिय महासभा संस्थान उदयपुर शहर कार्यकारिणी और उदयपुर नगर निगम के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित की जाती है। जयंती से पूर्व 7 दिन के साप्ताहिक कार्यक्रम उदयपुर शहर में विभिन्न संगठनों द्वारा भिन्न-भिन्न स्थानों पर आयोजित किए जाते हैं। महाराणा प्रताप जयंती के दिन के कार्यक्रम में महाराणा प्रताप स्मारक, मोती मगरी स्थित भव्य स्मारक के दर्शन प्रातः 7:30 पर सभी सामाजिक संगठनों द्वारा पारंपरिक वेशभूषा में किए जाते हैं। तत्पश्चात् फतेह सागर से चेतक सर्कल से 8:30 हाथीपोल मार्ग होते हुए एमव शोभायात्रा तैयार होती है।



जिसमें, पैदल, वाहन, झांकियाँ, महिलायें, बुजुर्ग, बालक-बालिकाएँ एवम् प्रबुद्धजन, गाजे-बाजे सम्मिलित होते हैं। शोभायात्रा हाथीपोल से होते हुए घंटाघर, बड़ा बाजार, मुखर्जी चौक, झीनी रेत, अस्थल, मंदिर, सूरजपोल, बापू बाजार, देहली गेट से होते हुए अंत में टॉउन हॉल सभागार में 10:30-11:00 पर पहुंचती है। जहाँ कार्यक्रम के पश्चात् शोभायात्रा दोपहर करीब 1 बजे तक समाप्त होती है। इस वर्ष महाराणा प्रताप सिंह की

484वीं जयंती 9 जून 2024 (रविवार) ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को है। संगठन मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह मायदा ने सभी युवाओं को कार्यक्रम की रूपरेखा समझाई। भानुप्रताप सिंह जीलवाड़ा एवं अर्जुन सिंह गढ़पुरा द्वारा युवाओं में जोश भरा गया और कहा कि युवा का उल्लास वायु होता है और हमारा प्रत्येक युवा वायु से भी तेज होता है। वह चाहे जो कर सकता है। करनी सेना के युवा अध्यक्ष अर्जुन सिंह गढ़पुरा ने बताया की हमें प्रताप जयंती हेतु

## कार में परिवहन किया जा रहा 89.400 किलोग्राम डोडा चूरा ज़ब्त

## संजीवनी टुडे

चित्तौड़गढ़। जिले की सदर निम्बाहेड़ा थाना पुलिस ने अवैध मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ कार्यवाही करते हुए रविवार को नाकाबंदी के दौरान कार में अवैध रूप से परिवहन किया जा रहा 89.400 किलोग्राम डोडाचूरा जब्त कर स्विफ्ट डिजायर कार जब्त की है। पुलिस अधीक्षक श्री सुधीर जोशी ने बताया कि जिले में अवैध मादक पदार्थों की खरीद-फरोख्त व परिवहन एवं भण्डारण करने वालों के खिलाफ कार्यवाही के तहत एएसपी परबत सिंह व डीएसपी निम्बाहेड़ा बदीलाल राव के मार्गदर्शन में उदयलाल एसआई फल जापा द्वारा रविवार रात्रि को मयवा धनोरा रोड़ पर नाकाबन्दी की जा रही थी। नाकाबन्दी के दौरान धनोरा की तरफ से स्विफ्ट डिजायर कार आती नजर आई। स्विफ्ट डिजायर कार चालक पुलिस जाब्ता को देखकर नाकाबन्दी से पहले गाड़ी छोड़कर भाग गया। जो रात्रि का समय होने से दिखाई नहीं दिया। कार में



कोई अवैधानिक/संदिग्ध वस्तु होने की सम्भावना होने से कार को चैक किया तो चालक व खलासी सीट के पीछे और डिग्री में अंदर काले कट्टे नजर आये। कट्टों को कार से निकाल कर चेक किया तो डोडा चूरा भरा हुआ मिला। जिसका वजन करने पर 89.400 किलोग्राम हुआ। उक्त अवैध डोडा चूरा व स्विफ्ट डिजायर कार को जब्त किया गया। मौके से फरार कर चालक की तलाश व प्रकरण में अनुसंधान जारी है? कार्यवाही करने वाली पुलिस टीम- उदयलाल एसआई थाना सदर निम्बाहेड़ा, एएसआई सुन्दरपाल, हैड कानि. प्रमोद कुमार, कानि सुरेंद्रपाल, धर्मचंद, बहादुर सिंह, जीवनलाल व सुश्री।

## 11 टन से अधिक अवैध खेर की लकड़ी जब्त, आईशर ट्रक में परिवहन करते दो गिरफ्तार

## संजीवनी टुडे

चित्तौड़गढ़। जिले के सदर निम्बाहेड़ा थाना पुलिस ने अवैध खेर की लकड़ी की तस्करी के खिलाफ बड़ी कार्यवाही करते हुए सोमवार को नाकाबंदी के दौरान एक आईशर ट्रक में परिवहन की जा रही 11.300 टन से अधिक खेर की लकड़ी जब्त कर हरियाणा राज्य के दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस अधीक्षक श्री सुधीर जोशी ने बताया कि जिले में खेर की लकड़ी की खरीद-फरोख्त व परिवहन एवं भण्डारण करने वालों के खिलाफ कार्यवाही के तहत एएसपी परबत सिंह व डीएसपी निम्बाहेड़ा बदीलाल राव के मार्गदर्शन में थानाधिकारी सजय शर्मा पुनि के निर्देशानुसार एएसआई लेखराज मय टीम द्वारा सोमवार रात्रि को दोरिया से लसडावन रोड़ पर नाकाबन्दी की जा रही थी। नाकाबन्दी के दौरान दोरिया की तरफ से एक आईशर ट्रक आया जिसको चैक करने



हेतु रुकवाना चाहा तो ट्रक चालक के अपने वाहन की गति बढा दी, जिस पर उक्त ट्रक को नाकाबन्दी हेतु लगाये गये बैरिबर की सहायता से रोका गया। ट्रक के रुकते ही ट्रक चालक व मालिक ने ट्रक से भागने का प्रयास किया, मगर पुलिस जापा द्वारा बरती गई सजगता से उक्त व्यक्तियों के भागने के मनसुबे पर पानी फिर गया। ट्रक चालक द्वारा नाकाबन्दी तोड़ कर ट्रक को भाग ले जाने व पुलिस द्वारा रोके जाने के बाद खुद भागने का प्रयास करने पर ट्रक में कोई अवैधानिक/संदिग्ध वस्तु होने की सम्भावना होने से ट्रक का तिरपाल खुलवाकर चैक किया गया तो ट्रक के

अन्दर अवैध खेर की लकड़ीयों के गट्टे छिले हुये मिले। जिसको चैक किया तो कुल 11.300 टन खेर की लकड़ी मिली। जिसे जप्त कर खेर की लकड़ी का परिवहन करने वाले ट्रक चालक व मालिक हरियाणा राज्य के फरिदाबाद जिले के थाना तारु के अन्तर्गत भंगो निवासी शबिर पिता मोहम्मद अली मेव तथा एक अन्य हरियाणा राज्य के नूंह जिले के मेवात थानान्तर्गत गॉव टिकड मोहल्ला गोलपुरी निवासी इम्तियाज पिता मम्मन खान मेव को गिरफ्तार किया गया। आरोपियों ने उक्त खेर की लकड़ी को हरियाणा दिल्ली की तरफ ले जाना बताया। आरोपियों के कब्जे से जप्तशुदा खेर की लकड़ी की खरीद फरोख्त के सम्बन्ध में अनुसंधान जारी है।

कार्यवाही करने वाली पुलिस टीम- एएसआई लेखराज, कानि सुरेंद्रपाल, नरपाल सिंह व धर्मचंद ।

## अवैध खनन की रोकथाम को लेकर कलक्टर ने ली बैठक

## संजीवनी टुडे

राजसमंद। अवैध खनन, निर्गमन, भण्डारण की रोकथाम, खनन गतिविधियों की मॉनिटरिंग तथा पर्यावरण संरक्षण हेतु किये गये कार्यों की समीक्षा हेतु गठित जिला स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक जिला कलक्टर डॉ भंवर लाल की अध्यक्षता में आयोजित की गई। सर्वप्रथम जिनेश हुमड़, खनि अभियन्ता राजसमन्द खण्ड प्रथम द्वारा अवगत करवाया गया कि जिले में इस वित्ति वर्ष में खनिजों के अवैध खनन, निर्गमन, भण्डारण के कुल 25 प्रकरण बनाये जाकर 16.85 लाख रू की शक्ति वसूली गई है। गत बैठक दिनांक 15.04.2024 के पश्चात दिनांक 08.04.2024 तक कुल 13 प्रकरण बनाये जाकर रू 9.10 लाख की शक्ति राशि की वसूली की गई है। जिले में खनिज बजरी को अवैध खनन हेतु तहसील रेलमग, राजसमंद, नाथद्वारा, आमेट विभिन्न स्थानों पर चैक पोस्ट स्थापित कर बोर्डर होम गाई लगाये गए हैं। जिले में खनिज बजरी, मेसरीन स्टोन, क्वार्टज फ्रेल्सपर के अवैध खनन के प्रकरण मुख्यतया प्राप्त होते हैं। जिसके कर्म में सभी संबंधित विभागों द्वारा रोकथाम हेतु समन्वित प्रयास किया जाता है। जिला परिवहन अधिकारी द्वारा अवगत करवाया गया कि 1 मार्च, 2023 से 30 अप्रैल 2024 तक ओवरलॉड के 631 प्रकरण बनाये जाकर 67 लाख रूपये की जर्मुना राशि वसूल की गई है। खनिज विभाग द्वारा प्रेषित प्रकरणों में भी परिवहन विभाग की कार्यवाही की जा रही है। जिले में खनिजों के अवैध खनन / निर्गमन की रोकथाम हेतु पुनः सभी विभागों के समन्वय से सतत चौकिल की जाए। संवेदनशील क्षेत्रों को चिन्हित कर औचक कड़ी कार्यवाही की जाए। संपर्क पोर्टल पर अवैध खनन से संबंधित शिकायतों का त्वरित निस्तारण किया जावे एवं जिन क्षेत्रों से संबंधित शिकायत बार-बार प्राप्त होती है उन क्षेत्रों में समय-समय पर निरीक्षण कर प्रभावी कार्यवाही की जाए। खनिज बजरी के अवैध स्टॉक को चिन्हित किया जावे एवं उनके विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जावे। अवैध स्टॉक के चिन्हिकरण का कार्य राजस्व एवं खनिज विभाग द्वारा संयुक्त रूप से किया जाए। समाचार पत्रों में अवैध खनन के कर्म में प्रकाशित समाचार पर त्वरित कार्यवाही कर सूचना जिला कलक्टर कार्यालय को प्रेषित की जावे।

## बाल विवाह रोकने हेतु प्रशासन सख्त, सरपंच-पंच का भी दायित्व, 'टालमटोल अब सम्भव नहीं: राठौड़

## संजीवनी टुडे

राजसमंद। बाल विवाह की प्रभावी रोकथाम हेतु बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम, 2006 के अन्तर्गत 18 वर्ष से कम उम्र की बालिका एवं 21 वर्ष से कम उम्र के बालक का विवाह करना या रचना एक संज्ञेय अपराध किया गया है। राजस्थान सरकार द्वारा राज्य में बाल विवाह के रोकथाम हेतु राजस्थान बाल विवाह प्रतिषेध निगम, 2007 लागू किए गए हैं जिसके तहत बाल विवाह रोकथाम हेतु प्रत्येक जिला, उपखंड, तहसील स्तर पर सम्बन्धित विभिन्न प्राधिकारी विभागों के अधिकारियों को बाल विवाह प्रतिषेध अधिकारी (सी.एम.पी.ओ.) के रूप में नियुक्त किया गया है एवं उन्हें अधिनियम के तहत शक्तियाँ एवं कृत्यों के निष्पादन के लिए अधिकृत किया गया है। मुख्य कार्यकारी अधिकारी हनुमान सिंह राठौड़ ने बताया कि राजस्थान पंचायती राज नियम 1996 के अंतर्गत बाल विवाह के रोकथाम हेतु जनप्रतिनिधियों बाई पंच, सरपंच का भी दायित्व निहित किया गया है। बाल विवाह होने की सूचना मिलने पर पंचायत समिति सदस्य जिला परिषद सदस्य के द्वारा दोनों के अभिभाक्कों, रिश्तेदारों, समुदाय से बातचीत कर बाल विवाह को रोकने की समझाईश की जाएगी। बाल विवाह प्रतिषेध अधिकारी यह सुनिश्चित करेंगे कि ग्राम सभा या ग्राम पंचायत के किसी भी सदस्य की ओर से बाल विवाह को प्रोत्साहन न दिया जाए। गांवों में इस अधिनियम एवं बाल विवाह के बारे में जागरूकता पैदा करने का कार्य किया जाएगा, ग्राम सभा की बैठकों में नियमित रूप से इस विषय पर चर्चा की जाएगी। मुख्य कार्यकारी अधिकारी के लिए अर्जुन सावों के समय विशेषतः महिला ग्राम सभा का आयोजन कर पंचायत को बाल विवाह मुक्त पंचायत बनाने का वातावरण बनाया जाएगा। जिन बच्चों का बाल विवाह सम्पन्न हो चुका है उनको सूची तैयार कर बाल विवाह प्रतिषेध अधिकारियों को उपलब्ध कराया जाएगा ताकि बाल विवाह शुन्यकरण की कार्यवाही की जाएगी। उपखण्ड एवं ग्राम पंचायत स्तरीय बाल संरक्षण समिति को सक्रीय करते हुए बाल संरक्षण के मुद्दों, बाल विवाह, बाल तस्करी, बाल उत्पीड़न पर जागरूकता एवं रोकथाम सम्बन्धी कार्य किए जाएंगे। राजस्थान पंचायती राज नियम 1996 में बाल विवाह को रोकने का दायित्व सरपंच पर है। माननीय न्यायालय ने अंतरिम उपाय के तौर पर यह निर्देश दिए हैं कि बाल विवाह को रोकने के लिए जांच के सम्बन्ध में रिपोर्ट ली जाएगी।

## नृसिंह चतुर्दशी पर भीण्डर के आराध्यदेव नृसिंह भगवान

## संजीवनी टुडे

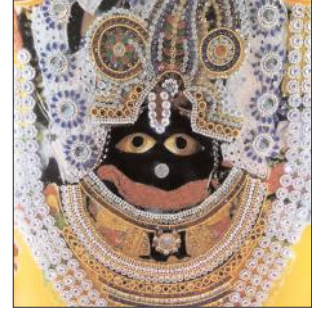
## शाही लवाजमें के साथ रजत पालकी में नगर भ्रमण पर निकलेंगे

उदयपुर। जिले के भींडर नगर के आराध्यदेव नृसिंह भगवान के प्राकटय उत्सव नृसिंह चतुर्दशी तीन दिवसीय आयोजन धूमधाम के साथ मनाया जाएगा। भक्त प्रहलाद धर्म जागरण सेवा समिति सुंदरकांड मंडल की ओर 19 मई को प्रातः 8:00 बजे से नृसिंह भगवान का मस्तकाभिषेक पंडितों द्वारा वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ होगा दोपहर 2 बजे से मंदिर प्रांगण पर महिला सत्संग का आयोजन किया जाएगा। शाम को 8 बजे से टाकुर जी को फलों का महाप्रसाद धरया जाएगा। उसके बाद रात्रि 8 बजे से विशाल संगीतमय सुंदरकांड पाठ का आयोजन होगा। 20 मई को रात्रि 8 बजे एक शाम नृसिंह भगवान के नाम भजन संध्या होगी जिसमें प्रसिद्ध भजन गायक राव रतन सिंह और पार्टी द्वारा भजनों की प्रस्तुतियाँ दी जाएगी और पूरी रात्रि कार्यक्रम चलेगा। 21 मई को सुबह पंडितों द्वारा महा इन्द्राभिषेक के पाठ होंगे उसके बाद चौबीसा समाज भीण्डर के तत्वाधान में शाम 4 बजे से नृसिंह भगवान रजत पालकी सिंहासन पर बैठकर नगर भ्रमण पर निकलेंगे। भगवान की विशाल रथयात्रा निकलेंगी जो



रावलीपोल, सतर बाजार, मोचीवाड़ा, हिंता गेट, बाहर का शहर, रामपोल बस स्टैंड, होस्पीटल रोड़, सुरजपोल चौपाटी से होते हुए रघुनाथ मंदिर पहुंचेंगी जहां पर हिरण्यकश्यप के नाटय का मंचन होगा और भगवान नृसिंह भगवान का प्राकटयोत्सव होगा। रथयात्रा पुनः निज मंदिर धाम मे भगवान पहुंचेंगे जहां पर भगवान की महाआरती का आयोजन होगा। रथ यात्रा में चौबीसा समाज के समाजजन अपनी पारंपरिक वेशभूषा पहनकर सम्मिलित होंगे। वही रथ यात्रा का नगरवासी भगवान का पुष्प वृष्टि कर स्वागत कर आशीर्वाद लेंगे। मंदिर पर भाव्य विद्युत् सजावट तथा गुब्बारों से सजाया जाएगा। कार्यक्रम की तैयारी समाज के युवाओं द्वारा शुरू कर दी गई है 100 वर्षों से हो रहा है।

कार्यक्रम:- भीण्डर में नृसिंह चतुर्दशी पर्व लगभग 100 वर्षों से इस



कार्यक्रम का आयोजन हो रहा है। उदयपुर संभागा का पहला कार्यक्रम:- नृसिंह चतुर्दशी का पहला कार्यक्रम उदयपुर संभागा के भीण्डर में ही होता है। इसको देखने के लिए सैकड़ों लोग दूर दराज से आते हैं। नृसिंह चतुर्दशी पर समाजजन रहें आते हैं: भींडर चौबीसा समाज के समाजजन व्यापार काम धंधे करने के लिए अन्य राज्यों में या अन्य शहर में और अन्य देश में भी कहीं होंगे तो वो समस्त समाजजन होली दीपावली जैसे त्योहारों पर अपने भींडर में सम्मिलित हो या नहीं हो लेकिन नृसिंह चतुर्दशी का पर्व को मनाने के लिए खासतौर पर आयोजन पूर्व यहाँ पर आ जाते हैं और यहीं पर हर कार्यक्रम में भाग लेते हैं भींडर में नृसिंह भगवान की है विशेष मान्यता: भींडर नगर की आरती देव नृसिंह भगवान की विशेष मान्यता है कि सवा रूपए की केसर मात्र से भगवान भक्त की हर मुराद पूरी करते हैं।

## सट्टे की पर्ची पर रूपयों का दाव लगाकर जुआ खेलते 06 गिरफ्तार, जुआ राशी 18560 रूपये बरामद



## संजीवनी टुडे

चित्तौड़गढ़। कस्बा निम्बाहेड़ा में बस स्टैंड व आसपास सट्टे की पर्ची पर रूपयों का दाव लगाकर जुआ खेलते छः लोगों को कोतवाली निम्बाहेड़ा थाना पुलिस ने गिरफ्तार कर उनके कब्जे से जुआ की राशी 18560 रूपये बरामद किये हैं। पुलिस अधीक्षक श्री सुधीर जोशी ने बताया कि जिले में जुआ/सट्टे के खिलाफ सख्त कार्यवाही करने हेतु एएसपी परबत सिंह एवं वृत्ताधिकारी निम्बाहेड़ा बदीलाल राव के मार्गदर्शन एवं धानाधिकारी कोतवाली निम्बाहेड़ा रामसुरे मीणा पु.नि. के निर्देशन में एएसआई अम्बालाल, देवेन्द्र सिंह, जुल्फकार खान, हैडकानि. तेजसिंह, कानिस्टेबल रामचन्द्र, प्रमोद कुमार, शिरपाल, रतन सिंह, धमेन्द्र कुमार, हेमन्त. विजयसिंह व गिर्रांज की अलग-अलग टीम गठित की गई। इसी क्रम में गठित टीमों को सूचना मिली कि कस्बा निम्बाहेड़ा में जगह जगह सार्वजनिक स्थान पर कुछ लोग सट्टे की पर्ची पर रूपयों का दाव लगाकर जुआ खेल रहे हैं। जिस पर गठित पुलिस टीमों द्वारा कस्बा निम्बाहेड़ा में कच्ची बस्ती, बस स्टैंड व नेहरू पार्क के पास कुछ व्यक्तियों द्वारा सट्टा पर्ची पर रूपये का दाव लगाकर जुआ खेलते हुये नजर आये। जिनको पुलिस टीम द्वारा रोका व यथास्थिति में रहने की हिदायत देकर जुआ खेलने वाले आरोपी निम्बाहेड़ा के नया बाजार निवासी 24 वर्षीय राजु जागोटिया पुत्र हरिश जाति माहेरशि, मध्यप्रदेश के आडमिया थाना नीमच सीटी जिला नीमच निवासी 53 वर्षीय करण पुत्र अम्बालाल ब्रहाम्मा, निम्बाहेड़ा के डाक बंगला रोड निवासी 40 वर्षीय शांतिलाल पुत्र ग्यारसी लाल तेली, कच्ची बस्ती निम्बाहेड़ा निवासी 27 वर्षीय संराज खान पुत्र समरोज खान, बडा कसाई मोहल्ला निम्बाहेड़ा निवासी 24 वर्षीय फरदीन खान उर्फ छोटे भईया पुत्र मन्जु खान व चन्दन चौक निम्बाहेड़ा निवासी 27 वर्षीय राजेन्द्र पहाड़ीया पुत्र मोड़ीराम खटीक को मौके से गिरफ्तार किया हैं। वहीं सट्टा पर्ची काटने वाले व पर्ची कटवाने वालों सभी 06 लोगों को तलाशी में मिले सट्टा आर्टिकल्स मय कुल सट्टा राशी 18560 रूपये को जप्त किया गया। मामले में प्रकरण पंजिबद्ध कर अनुसंधान किया जा रहा है।

## अवैध मादक पदार्थ गांजा बेचने के मामले में 2 आरोपी गिरफ्तार



## संजीवनी टुडे

उदयपुर। अवैध मादक पदार्थ गांजा बेचने के मामले में 2 आरोपी को गिरफ्तार किया। अम्बामाता थानाधिकारी डॉ. हनवन्त सिंह राजपुरोहित मय टीम द्वारा पूर्व में लंकेश कुमार दरांगी पिता फतेहलाल दरांगी निवासी लीलीराल मादला थाना फलासिया को 1.390 किलोग्राम अवैध गांजा के साथ गिरफ्तार कर जेल भिजवाया गया था व गिरफ्तारशुदा आरोपी को उक्त अवैध गांजा बेचने वाले अभियुक्तों की तलाश जारी थी। जिस पर अम्बामाता पुलिस टीम द्वारा गिरफ्तारशुदा आरोपी को उक्त अवैध गांजा बेचने वाले 2 अभियुक्त भरत पारसी पुत्र प्रभुलाल निवासी नया खोला थाना फलासिया जिला उदयपुर व पन्नालाल गमती पुत्र हमेरा निवासी राया मटाटा थाना खमनोर राजसमंद को गिरफ्तार किया गया। प्रकरण में अग्रिम अनुसंधान जारी है।

## दिन दहाड़े महिला से लूट, बंबोरा बाजार से सुलावास पैदल घर जाती महिला के गले से सोने की डोडी तोड़ ले भागे

## संजीवनी टुडे

उदयपुर। उदयपुर जिले के कुराबड़ थाना क्षेत्र के बंबोरा में सोमवार दिन दहाड़े राह चलते महिला से लूट की वारदात हो गई। जानकारी के अनुसार कसूमरिया आंबागुदा निवासी महिला केशु बाई पत्नी हीरा डांगी सोमवार दोपहर बाद बंबोरा बाजार से खरीदारी कर पैदल ही घर लौट रही थी तभी भदेल तालाब माताजी के निकट बाइक पर दो उच्छेक आए और अकेली महिला को देख गले में पहन रखी सोने की डोडी को तोड़ कर ले भागे। महिला के चिल्लाने पर अन्य राहगीर, ग्रामीण दौड़े तब तक वे भाग निकले। दिन दहाड़े घटना की चर्चा बनी रही। आसपास सीसीटीवी कैमरे भी खंगाले लेकिन कोई सुराग नहीं लगा।

## ब्लेक स्पॉट का सर्वे करें, सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए हट संभव प्रयास करें: कलक्टर

## संजीवनी टुडे

## जिला कलक्टर ने जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक ली

राजसमंद। जिला कलक्टर डॉ. भंवर लाल की अध्यक्षता में सड़क सुरक्षा समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर नरेश बुनकर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनंत कुमार सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे। बैठक में जिला कलक्टर ने ब्लेक स्पॉट सर्वे के निर्देश देकर पुलिस, परिवहन, पीडब्ल्यूडी, एनएचएआई के एक-एक प्रतिनिधि को नियुक्त कर कमेटी का गठन किया। जिला परिवहन अधिकारी डॉ. कल्पना शर्मा ने बताया कि कमेटी को एक माह में जिले में ब्लेक स्पॉट का सर्वे कर रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी एवं जिले में ब्लेक स्पॉट और दुर्घटना संभावित क्षेत्र में एजेन्सियां सुधार कार्य करने का कार्य करेंगी। जिला कलक्टर द्वारा पुलिस विभाग से विगत तीन वर्षों के सड़क दुर्घटना के आंकड़े मांगे एवं पुलिस विभाग को निर्देश दिए कि सड़क दुर्घटना में कमी लाने में सभी विभाग प्रयास करें। कलक्टर ने जिला परिवहन



अधिकारी को सड़क सुरक्षा गतिविधियों पर प्रतिदिन कार्य करने एवं स्कूल, कॉलेज एवं मुख्य चौराहों पर हेल्मेट एवं सीट बेल्ट के बारे में लोगों का जागरूक करने के निर्देश दिए। कहा कि वे स्थान चिन्हित करें जहां ड्राईवर्गों का स्वास्थ्य, आंखों का परीक्षण करवाया जा सके। कलक्टर ने द्वारा बच्चों की सुरक्षा को लेकर जिला परिवहन अधिकारी को निर्देशित कर बालवाहिनियों की नियमित चौकिल करने की बात कही एवं बिना फिटनेस संचालित वाहनों के विरुद्ध कार्यवाही के निर्देश दिए। कलक्टर ने पीडब्ल्यूडी अधीक्षक अभियंता को निर्देश दिए कि हाईवे पर

झाड़ियां दुर्घटना का मुख्य कारण हैं। ऐसे में बारिश से पूर्व हाईवे पर झाड़ियों को तुरन्त प्रभाव से हटाया जाए। साथ ही एनएचएआई को पूल एवं सड़क कार्यों को शीघ्र सम्पन्न करने के निर्देश दिए। अदृश्य मोड़ पर रोड साईन एवं रिफ्लेक्टर आवश्यकतानुसार लगाने की बात कही। साथ ही एनएचएआई को साबुद किया की कुम्भलगढ़ क्षेत्र में निर्माणधीन सड़क कार्य में यदि पेड़ पौधों को क्षति पहुंचती है तो उन्हें पुनः लगाया जाए एवं हरियाली को बनाए रखें। टोल नाकों पर पशु एम्बुलेंस भी रखें ताकी सभी की जान बचाई जा सके।



सम्पादक की कलम से....

सम्पादकीय



## जहां रोशन है दिव्यांग बच्चों की दुनिया, वहां बसते हैं सपने



हाई वे, मुख्य सड़क, महानगरीय सड़क, राजमार्ग, साठ फुट्टा रोड, गली, चौपड़ आदि। इन नामों से कैसी तस्वीर बनती है? यही कि उक्त सारे नाम यातायात के प्रमुख साधनों में से एक हैं। सड़क उनमें से ऐसा मार्ग है जो जमीन पर रेलवे के अतिरिक्त बना करती है। क्या ऐसी भी गली की कल्पना कर सकते हैं जहां आप इंटर करें तो आपके साथ दूसरा कोई भी कंधे से कंधा मिला कर न चल सके। यानी ऐसी गली जहां धूप को भी आने के लिए इंजाजत मांगनी पड़े। जिस गली से बाहर निकलते ही बड़ी, चौड़ी सड़कें शुरू होती हैं। जहां से झांके पर एक चमचमाती नगरी, दुकानें, मॉल्स की दुनिया शुरू हो जाती है। इशारा ऐसी झुग्गी झोपड़ी से हैं जो दोआब में बसे हैं। जहां ज़िंदगी रोशन है। जहां टीवी है, फ्रीज है, साउंड सिस्टम है। बिजली पानी है। और राशन कार्ड भी। जहां गलियों में नालियां ऐसे पसरती हैं गोया सांप की नई प्रजाति पैदा हो गई हों। न केवल दिल्ली बल्कि मुंबई, चेन्नई, कोलकाता आदि तमाम महानगरों में बसी हैं। जहां से रोज काम पर जाने वाले भीड़ में कहां खो जाते हैं इसका अनुमान लगाना ज़रा कठिन होता है। इन्हें घरों से कई बार हमारे घर चौका बरतान करने वाली आती हैं। कभी सोचा है इनके बच्चे कहां, किन स्कूलों में दाखिल होते हैं। कहां इन्हें नई तालीम मिलती है। आदि। ऐसे ही कुछ सवाल हैं जिनका उत्तर शाप्य हमें देना होगा।

मोतीलाल नेहरू कैंप, संजय बस्ती, ओखला फेज 1 व 2, नेहरू प्लेस, कालका जी, गोविंदपुरी आदि जगहों पर दो फेक्ट्री के दोआब में गुलजार इन बस्तियों से मजदूर मिला करते हैं। जिनके बदौलत हमारा बड़ा काम हुआ करता है। जब ये वर्ग एक या दो माह के लिए भी गांव/घर चला जाता है तो हमारी आम जिनगी कहीं न कहीं प्रभावित होती है। हमारे सरकारी स्कूल पर भी विपरीत असर साफ देखे जा सकते हैं। खासकर पर्व त्योहारों पर, गर्मी की छुट्टियों में। जाते एक माह के लिए हैं लेकिन लौटते दो तीन माह बाद हैं। स्कूल टीचर मानते हैं कि हमारी मेहनत खराब हो जाती है। हमें दुबारा से शुरुआत करनी पड़ती है। इन बच्चों के साथ पढ़ने? पढ़ाने की दिक्कत बराबर बनी रहती है। जाने के बाद कब लौटेंगे किसी को भी नहीं पता।

इन कॉलोनियों, कैंप में बसने वाले बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य आदि का रख रखाव और मुहैया कराने में कुछ स्वयं सेवी संस्थाएं लगी हैं। जो बच्चों की शिक्षा और देखभाल करते हैं। एनजीओ के अलावा कुछ सीएसआर की गतिविधियां भी यहां बहुत ही शिद्दत से काम कर रही हैं। ये बिना आवाज़ किए अपने काम में विश्वास करती हैं। टेक महिन्द्रा फाउंडेशन उनमें से एक है। टेक महिन्द्रा फाउंडेशन ओखला में आस्था संस्था के मार्फत दिव्यांग बच्चों की बुनियादी तालीम पर काम करती है। आस्था संस्था पिछले तकरीबन पचीस सालों से दिव्यांग बच्चों के विभिन्न मुद्दों और समस्याओं को ध्यान में रख कर गर्दन झुकाए काम में जुटी है। इस संस्था में तकरीबन सौ से ज्यादा बच्चे आते हैं। सेंटर पर आने वाले बच्चों को महज पाठ्य पुस्तकीय शिक्षा मुहैया कराने की बजाए जीवन कौशल की समझ भी दी जाती है। इन दिव्यांग बच्चों को अंधेरी गलियों और आम जीवन की उपेक्षा से निकाल कर समाज और समुदाय से जोड़ा जाता है। इन बच्चों से बात करके तो देखिए जनाब इनके आत्मविश्वास में कमाल का उछाल और जीने की चाहत, उमंग की लहरें देखने? सुनने को मिलेंगी। ऐसे ही बच्चों की छोटी छोटी आंखों में बड़े बड़े सपने भरने और देखने का मादा पैदा करने में टेक महिन्द्रा फाउंडेशन पिछले लगभग दस साल से जुड़ा है। यह दीगर बात है कि यह फाउंडेशन काम बोलता है में विश्वास करता है न कि प्रचारित करने में। नाम बेशक हमारे बच्चों जैसे ही हैं इन बच्चों के। कमल, ज्योति, सानिया आदि आदि। लेकिन ये बच्चे हमारे सामान्य बच्चों से ज़रा अलग हैं। इनकी भी आंखें दो ही हैं लेकिन इन आंखों में देख सकने की रोशनी नहीं है। ऋग्वेद में एक मंत्र में कहा गया है, "चक्षोरमे चक्षु अस्तु" यानी नेत्र में देखने की क्षमता हो। वहीं कुछ बच्चे ऐसे हैं जो अंदर से बेचैन हैं जिन्हें ठहर कर समझने और प्यार करने की आवश्यकता है। ऐसा ही एक बच्चा है ओखला कैंप में। उसने ठहर कर विश्वास के साथ मेरे गाल को अपने कोमल हाथों, अंगुलियों से छुआ, सहलाया और गले लगा।

### आज का राशिफल

यह राशिफल जन्म राशि पर आधारित है। व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा जिस राशि पर थे, वही उसकी जन्म राशि होती है। यदि राशि की जानकारी आपको नहीं है तो अपने नामाक्षर से राशिफल देखें।

**मेघ (बु, च, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ):** आज भाग्य से कोई नया प्रस्ताव मिल सकता है। सरकारी काम आसानी से बन जाएंगे। अधिकारी सहयोग करेंगे। किसी चैरिटी आदि में धन खर्च करेंगे। मित्रों के साथ पार्टी में जा सकते हैं।

**वृषभ (ई,उ,ए,ओ,वा,वी,वू,वे,वो):** सुख-सुविधाओं पर खर्च होगा। व्यक्तिगत मामलों में गलतफहमी को जन्म देने वाली कोई बात हो सकती है। परिवार के साथ पार्टी में जा सकते हैं। कोई नया प्रस्ताव यदि आज मिलता है।

**मिथुन (क,की,कू,घ,ड, छ, के, के, ह):** कार्यों को मन लगाकर पूरा करेंगे। आपकी बढ़ते प्रभाव से कुछ लोगों को परेशानी हो सकती है। आज की गई मेहनत का पूरा फल नहीं मिलेगा। व्यक्तिगत मामलों को सावधानी से हल करें।

**कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो):** किसी योजना का क्रियान्वयन हो जाएगा। अभूरे काम भी किसी न किसी सहयोग से आज पूरे हो जाएंगे। धैर्यपूर्वक निर्णय लेने पड़ेंगे। भाग-दौड़ बनी रहेगी, परंतु यात्रा करना आज ठीक नहीं रहेगा।

**सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे):** परिवार के बड़े सदस्यों की आज्ञा मान कर चलेंगे तो फायदे में रहेंगे। लाभ के एक से अधिक अवसर सामने होंगे। चाहा गया सहयोग नहीं मिलने से काम खुद ही पूरे करने पड़ेंगे। बड़े भाई से लाभ होगा।

**कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, ठे, ठो):** आज घर और बाहर दोनों जगह आपके काम की सराहना होगी। काम के घंटे बढ़ जाएंगे अतः पिछले छूट्टे कामों को पहले पूरा कर लें। अधिकारी वर्ग प्रसन्न रहेगा। विद्यार्थी वर्ग लाभ में रहेगा।

**तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते):** आज काम बनने में थोड़ी असुविधा हो सकती है। विरोधियों से सावधान रहना होगा। प्रोपर्टी के खरीदने या बेचने से संबंधी बात हो सकती है। पुराने मित्रों से मुलाकात होने की संभावना है।

**वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू):** व्यावसायिक कार्यों का विस्तार करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ेगा। सहयोग मिल जाने से थोड़ी आसानी हो जाएगी। व्यक्तिगत संबंधों में सौहार्द की भावना बढ़ने से मन प्रसन्न होगा।

**धनु (ये, यो, भ, भी, भू, धा, फा, दा, भे):** आज का दिन महत्वपूर्ण काम करने के लिए नहीं है। निजी समस्याओं को अपने ऊपर हावी न होने दें। परिवार के साथ समय बिताना आवश्यक है, चाहे तो कहीं आउटिंग के लिए जा सकते हैं।

**मकर (मो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी):** आज स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा, परंतु काम फिर भी आसानी से बन जाएंगे। लाभ की कोई नई योजना बनाकर उस पर अमल करेंगे। मित्र विशेष सहयोगी बनकर सामने आएंगे।

**कुंभ (गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा):** आज घर की बुजुर्ग स्त्री की सलाह काम आएगी, महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय उसकी नजर अंदाज ना करें। यात्रा करना हित में नहीं रहेगा, बहुत जरूरी हो तो पहले मंदिर जाएं फिर यात्रा करें।

**मीन (दी, दू, ध, झ, ज, दे, दो, वा, वी):** आज योग्यता दिखाने का उचित अवसर मिलेगा। लाभ देने वाली छोटी यात्रा की संभावना है। बड़ी प्रतिस्पर्धा में भी विजयी होंगे। वाहन धीमी गति में चलाएँ, अन्य कार्यों में भी जल्दबाजी ना करें।

## बुद्ध हैं धर्म एवं व्यक्ति क्रांति के शिखर

बुद्ध जयन्ती/बुद्ध पूर्णिमा बौद्ध धर्म में एवं मानवता में आस्था रखने वालों का एक प्रमुख त्यौहार है। बुद्ध जयन्ती वैशाख पूर्णिमा को मनाया जाता है। पूर्णिमा के दिन ही गौतम बुद्ध का स्वर्गारोहण समारोह भी मनाया जाता है। बुद्ध की क्रांति किसी एक युग तक सीमित नहीं है। उनका लोकहितकारी चिन्तन एवं कर्म कालजयी, सार्वभौमिक, सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक है और युग-युगों तक समाज का मार्गदर्शन करता रहेगा। गौतम बुद्ध एक प्रकाशस्तंभ हैं, बुद्ध पूर्णिमा न केवल बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के लिये एक महत्वपूर्ण दिन है। उनको सबसे महत्वपूर्ण भारतीय आध्यात्मिक महामनीषी, सिद्ध-संन्यासी, समाज-सुधाकर धर्मगुरु में से एक माना जाता है। उन्हें धर्मक्रांतिके साथ-साथ व्यक्ति एवं विचारक्रांतिके सूत्रधार भी कह सकते हैं। उनकी क्रांतिवाणी उनके क्रांतिके व्यक्तित्व की द्योतक ही नहीं वरन् धार्मिक, सामाजिक विकृतियों एवं अंधरूढ़ियों पर तीव्र कटाक्ष एवं परिवर्तन की प्रेरणा भी है, जिसने असंख्य मनुष्यों की जीवन दिशा को बदला। बुद्ध संन्यासी बनने से पहले कपिलवस्तु के राजकुमार सिद्धार्थ थे। शांति की खोज में वे 27 वर्ष की उम्र में घर-परिवार, राजपाट आदि छोड़कर चले गए थे। भ्रमण करते हुए सिद्धार्थ काशी के समीप सारनाथ पहुंचे, जहाँ उन्होंने धर्म परिवर्तन किया। यहाँ उन्होंने बोधगया में बोधि वृक्ष के नीचे कठोर तप किया। कठोर तपस्या के बाद सिद्धार्थ को बुद्धत्व ज्ञान की प्राप्ति हुई और वह महान संन्यासी गौतम बुद्ध के नाम से प्रचलित हुए और अपने ज्ञान से समूचे विश्व को ज्योतिर्मय किया। बुद्ध ने जब अपने युग की जनता को धार्मिक-सामाजिक, आध्यात्मिक एवं अन्य यज्ञादि अनुष्ठानों को लेकर अज्ञान में घिरा देखा, साधारण जनता को धर्म के नाम पर अज्ञान में पाया, नारी को अपमानित होते देखा, शुद्धों के प्रति अत्याचार होते देखे-तो उनका मन जनता की सहानुभूति में उड़लित हो उठा। वे महलों में बंद न रह सके। उन्होंने स्वयं प्रथम ज्ञान-प्राप्ति का व्रत लिया था और वर्षों तक वनों में घूम-घूम कर तपस्या करके आत्मा को ज्ञान से आलोकित किया। उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को जिस चैतन्य एवं प्रकाश के साथ जीया है, वह भारतीय ऋषि परम्परा के इतिहास का महत्वपूर्ण अध्याय है। स्वयं ने ही ईश्वरीय सत्ता को पहचान लिया और फिर जनता में बुराइयों के खिलाफ आवाज बुलन्द की। लोकजीवन को ऊंचा उठाने के उन्होंने जो हिमालयीय प्रयत्न किये, वे अद्भुत और आश्चर्यकारी हैं।

बुद्ध ने बचपन में ही ईश्वरीय सत्ता को पहचान लिया और मानवता की मुक्ति तथा ईश्वरीय प्रकाश का मार्ग ढूँढ़ने के लिए उन्होंने राजसी भोगविलास त्याग दिया और अनेक प्रकार के शारीरिक कष्ट झेले। अंगुलिमाल जैसे दुष्टों ने अनेक तरह से उन्हें यातनायें पहुँचाई किन्तु धरती और आकाश की कोई भी शक्ति उन्हें दिव्य मार्ग की ओर चलने से रोक नहीं पायी। बुद्ध ने पवित्र पुस्तक त्रिपिटक के माध्यम से समता का सन्देश सारी मानव जाति को दिया। त्रिपिटक प्रेरणा देती है कि समता ईश्वरीय आज्ञा है, छोटी-बड़ी जाति-पाति पर आधारित वर्ण व्यवस्था मनुष्य के बीच में भेदभाव पैदा करती है। इसलिए वर्ण व्यवस्था ईश्वरीय आज्ञा नहीं है।

महात्मा बुद्ध ने मध्यममार्ग अपनाते हुए अहिंसा युक्त दस शीलों का प्रचार किया तो लोगों ने उनकी बातों से स्वयं को सहज ही जुड़ा हुआ पाया। उनका मानना था कि मनुष्य यदि अपनी तुष्णाओं पर विजय प्राप्त कर ले तो वह निर्वाण प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार उन्होंने पुरोहितवाद पर करारा प्रहार किया और व्यक्ति के महत्त्व को प्रतिष्ठित किया। जो मनुष्य बुद्ध की, धर्म की और संघ की शरण में आता है, वह सम्यक् ज्ञान से चार आर्य सत्यों को जानकर निर्वाण की परम स्थिति को पाने में सफल होता है। ये चार आर्य सत्य हैं - पहला दुःख, दूसरा दुःख का हेतु, तीसरा



### विवार बिन्दु

न अतीत की स्मृति और न भविष्य की चिंता। जो आज को जीना सीख लेता है, समझना चाहिए उसने मनुष्य जीवन की सार्थकता को पा लिया है और ऐसे मनुष्यों से बना समाज ही संतुलित हो सकता है, स्वस्थ हो सकता है, समतामूलक हो सकता है। जरूरत है उन्नत एवं संतुलित समाज निर्माण के लिए महात्मा बुद्ध के उपदेशों को जीवन में डालने की। बुद्ध-सी गुणात्मकता को जन-जन में स्थापित करने की। ऐसा करके ही समाज को स्वस्थ बना सकेंगे। कोरा उपदेश तक बुद्ध को सीमित न बनाएं, बल्कि बुद्ध को जीवन का हिस्सा बनाएं, जीवन में ढालें।

से रोक नहीं पायी। बुद्ध ने पवित्र पुस्तक त्रिपिटक के माध्यम से समता का सन्देश सारी मानव जाति को दिया। त्रिपिटक प्रेरणा देती है कि समता ईश्वरीय आज्ञा है, छोटी-बड़ी जाति-पाति पर आधारित वर्ण व्यवस्था मनुष्य के बीच में भेदभाव पैदा करती है। इसलिए वर्ण व्यवस्था ईश्वरीय आज्ञा नहीं है।

महात्मा बुद्ध ने मध्यममार्ग अपनाते हुए अहिंसा युक्त दस शीलों का प्रचार किया तो लोगों ने उनकी बातों से स्वयं को सहज ही जुड़ा हुआ पाया। उनका मानना था कि मनुष्य यदि अपनी तुष्णाओं पर विजय प्राप्त कर ले तो वह निर्वाण प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार उन्होंने पुरोहितवाद पर करारा प्रहार किया और व्यक्ति के महत्त्व को प्रतिष्ठित किया। जो मनुष्य बुद्ध की, धर्म की और संघ की शरण में आता है, वह सम्यक् ज्ञान से चार आर्य सत्यों को जानकर निर्वाण की परम स्थिति को पाने में सफल होता है। ये चार आर्य सत्य हैं - पहला दुःख, दूसरा दुःख का हेतु, तीसरा

दुःख से मुक्ति और चौथा दुःख से मुक्ति की ओर ले जाने वाला अष्टांगिक मार्ग। इसी मार्ग की शरण लेने से मनुष्य का कल्याण होता है तथा वह सभी दुःखों से छूटकारा पा जाता है। निर्वाण के मायने है तुष्णाओं तथा वासनाओं का शान्त हो जाना। साथ ही दुष्टों से सर्वथा छूटकारे का नाम है- निर्वाण। बुद्ध का मानना था कि अति किसी बात की अच्छी नहीं होती है। मध्यम मार्ग ही ठीक होता है। बुद्ध ने कहा है - वैर से वैर कभी नहीं मिटता। अवैर (मैत्री) से ही वैर मिटता है - यही सनातन नियम है।

गौतम बुद्ध ने बौद्ध धर्म का प्रवर्तन किया और अत्यन्त कुशलता से बौद्ध भिक्षुओं को संगठित किया और लोकतांत्रिक रूप में उनमें एकता की भावना का विकास किया। इसका अहिंसा एवं करुणा का सिद्धांत इतना लुभावना था कि सम्राट अशोक ने दो वर्ष बाद इससे प्रभावित होकर बौद्ध मत को स्वीकार किया और युद्धों पर रोक लगा दी। इस प्रकार बौद्ध मत देश की सीमाएँ लांघ कर

विश्व के कोने-कोने तक अपनी ज्योति फैलाने लगा। आज भी इस धर्म की मानवतावादी, बुद्धिवादी और जनवादी परिकल्पनाओं को नकारा नहीं जा सकता और इनके माध्यम से भेद भावों से भरी व्यवस्था पर जोरदार प्रहार किया जा सकता है। यही धर्म आज भी दुःखी, पीड़ित एवं अशांत मानवता को शांति प्रदान कर सकता है। ऊँच-नीच, भेदभाव, जातिवाद पर प्रहार करते हुए यह लोगों के मन में धार्मिक एकता का विकास कर रहा है। विश्व शांति एवं परस्पर भाईचारे का वातावरण निर्मित करके कला, साहित्य और संस्कृति के विकास के मार्ग को प्रशस्त करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। मानवता को बुद्ध की सबसे बड़ी देन है भेदभाव को समाप्त करना। यह एक विद्वान्वादी ही है कि बुद्ध की इस धरती पर आज तक छुआछूत, भेदभाव किसी न किसी रूप में विद्यमान हैं। कुछ दशक पूर्व डाक्टर भीमराव अम्बेडकर ने भारी संख्या में अपने अनुयायियों के साथ बौद्ध मत को अंगीकार किया ताकि हिन्दू समाज में उन्हें बराबरी का स्थान प्राप्त हो सके। मूलतः बौद्ध मत हिन्दू धर्म के अनुरूप ही रहा और हिन्दू धर्म के भीतर ही रह कर महात्मा बुद्ध ने एक क्रांतिकारी और सुधारवादी आन्दोलन चलाया।

महात्मा बुद्ध सामाजिक क्रांति के शिखर पुरुष थे। उनका दर्शन अहिंसा और करुणा का ही दर्शन नहीं है बल्कि क्रांति का दर्शन है। उन्होंने केवल धर्म तीर्थ का ही प्रवर्तन ही नहीं किया बल्कि एक उन्नत और स्वस्थ समाज के लिए नये मूल्य-मानक गढ़े। उन्होंने प्रगतिशील विचारों को सही दिशा ही नहीं दी बल्कि उनमें आये ठहराव को तोड़कर नयी क्रांति का सूत्रपात किया। बुद्ध ने कहा - पुण्य करने में जल्दी करो, कहीं पाप पुण्य का विधास ही न खो दे। सामाजिक क्रांति के संदर्भ में उनका जो अवदान है, उसे उजागर करना वर्तमान युग की बड़ी अपेक्षा है। ऐसा करके ही हम एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकेंगे।

बुद्ध ने समतामूलक समाज का उपदेश दिया। जहां राग, द्वेष होता है, वहां विषमता पनपती है। इस दृष्टि से सभी समस्याओं का उत्स है- राग और द्वेष। व्यक्ति अपने स्वार्थों का पोषण करने, अर्थ को प्रदर्शित करने, दूसरों को नीचा दिखाने, सत्ता और सम्पत्ति हथियाने के लिए विषमता के गलियारों में भटकता रहता है। बुद्ध ने जीवन का सच जाना। फिर उन्होंने कहा अपने भीतर कुछ भी ऐसा न आने दो जिससे भीतर का संसार प्रदूषित हो। न बुरा देखो, न बुरा सुनो, न बुरा कहो। यही खालीपन का संदेश सुख, शांति, समाधि का मार्ग है। उन्होंने अप्य दीपो भव- अपने दीपक स्वयं बनने की बात कही। क्योंकि दिन-रात संकल्पों-विकल्पों, सुख-दुःख, हर्ष-विषाद से घिरे रहना, कल की चिंता में झुलसना तनाव का भार ढोना, ऐसी स्थिति में भला मन कब कैसे खाली हो सकता है? कैसे संतुलित हो सकता है? कैसे समाधिस्थ हो सकता है? इन स्थितियों को पाने के लिए वर्तमान में जीने का अभ्यास जरूरी है।

## भगवान शिव के हर रूप के दर्शन हो जाएंगे कर्नाटक के इन शिव मंदिरों में

दक्षिण भारत में मूर्ति पूजा अधिक होती है इसलिए वहां काफी भव्य आकार के मंदिर भी हैं और ये मंदिर काफी पुराने और खूबसूरत भी हैं। आइये जानते हैं कर्नाटक में स्थित भगवान के शिव मंदिरों के बारे में। कहते हैं इस धरती को बनाने वाला भगवान है और हम सब भगवान के बच्चे हैं। भारत में हिंदू धर्म में भगवान को आकार दिया गया है और काफी लोग मूर्ति पूजा में विश्वास रखते हैं। वैसे तो भगवान को सभी मानते हैं लेकिन आप लोगों ने अकसर देखा होगा कि दक्षिण भारत के लोग अपनी संस्कृतियों को लेकर काफी भावुक होते हैं। उनका पूजा पाठ में घोर विश्वास होता है वो किसी भी तरह का खिलवाड़ अपनी संस्कृति, रीति रिवाज के खिलाफ बर्दाश्त नहीं करते हैं। दक्षिण भारत में मूर्ति पूजा अधिक होती है इसलिए वहां काफी भव्य आकार के मंदिर भी हैं और ये मंदिर काफी पुराने और खूबसूरत भी हैं। आइये जानते हैं कर्नाटक में स्थित भगवान के शिव मंदिरों के बारे में -

कर्नाटक राज्य के उत्तर कन्नड जिले के गोकर्ण में बने इस प्रसिद्ध शिव मंदिर को महाबलेश्वर मंदिर कहा जाता है। यह एक प्राचीन मंदिर है, जो चौथी शताब्दी से संबंध रखता है। इस मंदिर का निर्माण त्रिविडु शैली में किया गया था। यह मंदिर दक्षिण के



प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों में गिना जाता है। यह मंदिर का मुख कारवार सिटी बीच की तरफ रिवाज के खिलाफ बर्दाश्त नहीं करते हैं। दक्षिण भारत में मूर्ति पूजा अधिक होती है इसलिए वहां काफी भव्य आकार के मंदिर भी हैं और ये मंदिर काफी पुराने और खूबसूरत भी हैं। आइये जानते हैं कर्नाटक में स्थित भगवान के शिव मंदिरों के बारे में -

कर्नाटक राज्य के उत्तर कन्नड जिले के गोकर्ण में बने इस प्रसिद्ध शिव मंदिर को महाबलेश्वर मंदिर कहा जाता है। यह एक प्राचीन मंदिर है, जो चौथी शताब्दी से संबंध रखता है। इस मंदिर का निर्माण त्रिविडु शैली में किया गया था। यह मंदिर दक्षिण के

## सूखा नशा यानि ड्रग्स और आतंकवाद, वैश्विक मानवता के लिए गम्भीर चुनौती

### विवार बिन्दु



**संजीव ठाकुर**  
मूलतः मुंबई गोवा और पाकिस्तानी सरहद से लगे क्षेत्र और राज्य से सूखे नशे पदार्थों की आवक सभी राज्यों में होती है। निसंदेह इसे गंभीर षडयंत्र के रूप में लिया जाना चाहिए।

पंजाब एक ऐसा प्रदेश है जहाँ सूखे नशे की बड़ी खेप अफगानिस्तान [तालिबान] और पाकिस्तान की सीमा से लगे होने के कारण बड़ी आसानी से पिछले कई दशकों से आ रही है और वहां की युवा पीढ़ी नशे की गिरफ्त में अपना जीवन नष्ट कर रही है। इसी तरह पंजाब में पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद और खालिस्तानी आतंकवाद ने बीते कई दशकों से पंजाब को अशांत कर रखा है, अब फिर खालिस्तानी अंतकवाद ने पंजाब के मोहाली में बम विस्फोट कर अपना सन्देश दे दिया है। सूखा नशा और आतंकवाद मानवता के लिए जहर ही है, इन पर प्रवाही नियंत्रण तत्काल जरूरी है। देश में लगातार हो रही ड्रग्स की सप्लाई ने देशभर में अपराधों का इजाफा कर दिया है। नशीले पदार्थ अपराधिक गतिविधियों के लिए शासन, प्रशासन तथा पुलिस के लिए एक गंभीर चुनौती बन चुका है। नशीले पदार्थों के अंतरराष्ट्रीय, अंतर राज्यीय तस्करी देश तथा विश्व के लिए एक बड़ा सिरदर्द बनी

हुई है। यह चुनौती इसलिए भी है कि नशे की लत में बड़े शहरों के तमाम पुंजीपति नशे के आदी हो चुके परिस्थितियां बहुत गंभीर एवं चुनौतीपूर्ण बन चुकी हैं। देश की मुख्य सड़कों के आसपास तमाम नशीले पदार्थ की सप्लाई करने वाले तस्करी अपनी तैयारी में जुट गए हैं। देश के सभी राज्यों में नशीले पदार्थों के विरोध में केंद्र के निर्देशन पर लगातार कार्रवाई की जा रही है और युवा वर्ग बच्चों को सोशल मीडिया के द्वारा भी इसकी बुराई के संबंध में लगातार अवगत कराया जा रहा है एवं इस बुराई से दूर रहने का आह्वान किया गया है, देश के बड़े-बड़े रिसोर्ट, जंगल के पिकनिक स्पॉट, देश की मुख्य सड़कों के आसपास ढाबों के संचालकों पर भी नजर रखने की योजना को मूर्त रूप दिया जाना है ताकि अपराधों में कमी आ सके, शराब से तो अपराध होते ही हैं पर सूखे नशे से अपराधिक ज्यादा उम्र हिसक और मस्तिष्क शुन्य हो जाते ऐसे में अपराध करने में उन्हें कोई हिचक नहीं होती, और

में देश को यह बात समझ में आई कि सूखे नशे की लत में बड़े शहरों के तमाम पुंजीपति नशे के आदी हो चुके परिस्थितियां बहुत गंभीर एवं चुनौतीपूर्ण बन चुकी हैं। देश की मुख्य सड़कों के आसपास तमाम नशीले पदार्थ की सप्लाई करने वाले तस्करी अपनी तैयारी में जुट गए हैं। देश के सभी राज्यों में नशीले पदार्थों के विरोध में केंद्र के निर्देशन पर लगातार कार्रवाई की जा रही है और युवा वर्ग बच्चों को सोशल मीडिया के द्वारा भी इसकी बुराई के संबंध में लगातार अवगत कराया जा रहा है एवं इस बुराई से दूर रहने का आह्वान किया गया है, देश के बड़े-बड़े रिसोर्ट, जंगल के पिकनिक स्पॉट, देश की मुख्य सड़कों के आसपास ढाबों के संचालकों पर भी नजर रखने की योजना को मूर्त रूप दिया जाना है ताकि अपराधों में कमी आ सके, शराब से तो अपराध होते ही हैं पर सूखे नशे से अपराधिक ज्यादा उम्र हिसक और मस्तिष्क शुन्य हो जाते ऐसे में अपराध करने में उन्हें कोई हिचक नहीं होती, और

इस तरह वे नशे में अपराधिक कृत्य करने से नहीं चूकते। अंतरराष्ट्रीय सीमा से आने वाला ड्रग्स शारीरिक रूप से भी काफी नुकसानदेह होता है अंतरराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय नशीले पदार्थों की तस्करी को रोकने का एक राष्ट्रीय स्तर पर योजना बनाकर उसे रोकने का प्रयास किया जा रहा है, जितने व्यक्ति नशा करके अपराध करने के लिए दोषी हैं। उससे ज्यादा दोषी नशीले पदार्थों के तस्करी करने वाले भी हैं, तस्करी समूह को चिन्हित कर उस पर बड़ी कार्रवाई करने की देश को गंभीर आवश्यकता है, देश में शराब जहां ग्रामीण क्षेत्रों में एक बड़ी बुराई है उससे ग्रामीण आमजन को आर्थिक नुकसान के साथ-साथ शारीरिक नुकसान भी बहुत बढ़ा होता है, इसी के साथ शहरी क्षेत्रों में खासकर बड़े शहरों में सूखा नशा एक बड़ी सामाजिक बीमारी की तरह अत्यंत गंभीर चुनौती बन गई है, इसे रोकने के हर संभव प्रयास किए जाने चाहिए तभी इस सामाजिक गंभीर समस्या पर कुछ राहत और निदान मिल सकता है।



### आज का इतिहास

### 14 मई की महत्वपूर्ण घटनाएँ

1999	पाकिस्तानी पत्रकार जनम सेठी की पत्रिका फ़ाइट टाइम्स की जन्ती, सदी का आखिरी विश्व कप क्रिकेट की लॉर्ड्स (इंग्लैंड) में शुरूआत।
2001	भारत और मलेशिया में सात समझौते।
2004	डेली मिरर नामक पत्रिका ने ईराक में युद्धबंदियों पर कथित अत्याचार को दर्शाने वाली झूठी तस्वीरों के प्रकाशन के लिए ब्रिटेन से माफी मांगी।
2006	पूर्व कम्प्यूनिस्ट नेता गिओर्गिओ नैपोलितानो ईटली के नये राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित। न्यूयार्क टाइम्स के प्रबंध सम्पादक और पुलित्जर पुरस्कार विजेता ए.एम. रोसेंथल का 84 वर्ष की अवस्था में निधन। चीन ने कला के क्षेत्र पर चल रही जालसाजी से बचने के लिए एक आयोग का गठन किया।
2007	जापान ने अपने शांतिवादी संविधान में संशोधन सम्बन्धी विधेयक को मंजूरी दी।
2008	टाइम्स एनआईई ने इंटरनेशनल न्यूजपेपर मार्केटिंग एसोसियेशन (इनमा) अवार्ड-2008 जीता।
2010	भारत-रूस के बीच रक्षा, परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, हाइड्रोकार्बन, व्यापार एवं निवेश आदि में 22 समझौते हुए।
जन्मे व्यक्तित	
1657	शम्भाजी - शिवाजी के ज्येष्ठ पुत्र और उत्तराधिकारी थे।
1892	अरुण चन्द्र गुहा - प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी।



# छात्र जीवन में शाकाहार का महत्व



## हेल्थ संवाददाता

पैरेंट्स के सामने अक्सर यह परेशानी आती है कि वह बच्चों में टेंशन का पता नहीं लगा पाते। टेंशन का शिकार बच्चा नॉर्मल ही दिखता है किन्तु उसके बर्ताव को बारीकी से देखने पर पता लगाया जा सकता है कि वह टेंशन में है।

## टेंशन के लक्षण

भूख न लगना, पढ़ाई में मन न लगना, गुमसुम रहना, बिना किसी बात के रोना, चिड़चिड़ा हो जाना, अकेले ज्यादा वक्त बिताना और सोचते रहना, बाकियों के साथ बेवजह गुस्से भरा बर्ताव करना, स्कूल से अचानक ज्यादा शिकायतें आना, जिद करना, अगर इनमें से कोई भी लक्षण दिखे तो उन्हें गंभीरता से लें। यहां ध्यान रखने वाली बात यह है कि ये



लक्षण किसी और बीमारी के भी हो सकते हैं। इसलिए पैरेंट्स को पूरी तरह से जांच करा लेनी चाहिए।

## कैसे कम होगा टेंशन

यदि आपका बच्चा टेंशन में है तो इसे फौरन दूर करने के उपाय खोजें। बच्चों में टेंशन की दस्तक सुनते ही इन बातों पर अमल करें

**साथ बिताना वक्त:** पैरेंट्स को अपने बच्चों के साथ वक्त बिताना चाहिए। बच्चे अपने पैरेंट्स के सबसे ज्यादा करीब होते हैं और उनके साथ कुछ कॉलिंग टाइम बिताना चाहते हैं। बच्चों के बड़े होने तक पैरेंट्स को उन्हें वक्त देना चाहिए।

**चलो दोस्त बन जाएं:** कुछ पैरेंट्स बच्चों को छोटी-छोटी गलतियों पर उन्हें डांट देते हैं। उनकी कोई भी बात सुने बिना केवल अपने फैसले थोपते रहते हैं। इससे बच्चों के मन में पैरेंट्स के लिए एक डर का भाव पैदा हो जाता है, जिसके कारण वह अपनी बातें कहने से डरने लगता है। पैरेंट्स को अपने बच्चों का दोस्त बनना भी जरूरी है ताकि वे अपनी सभी बातों को उनसे शेयर करें। बच्चे के साथ स्कूल में या बाहर कोई भी अनहोनी घटना होती है या ऐसा कुछ होता है जिससे वह टेंशन में आ जाता है तो उसे धैर्य से सुनें और समझने-सुलझाने की कोशिश करें।

# कही आपके बच्चे टेंशन में तो नहीं...



## करो अपने मन की

बच्चों को फ्रीडम देना भी जरूरी है लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि उन्हें बेवजह कुछ भी करने की छूट दे दी जाए। बच्चों को फ्रीडम देने का मतलब है कि वे अपने करियर में जो भी करना चाहे उसे समझें और सही दिशा देने में मदद करें। इसके अलावा बच्चों को कुछ फैसले लेने का हक देने से वह खुद को महत्वपूर्ण समझने लगते हैं।

## मनी मैनेजमेंट

बच्चों को मनी मैनेजमेंट भी सिखाना चाहिए। पैरेंट्स को बच्चों की पॉकेट मनी का हिस्सा तय कर देना चाहिए। यह हिस्सा न तो बहुत कम हो न ही बहुत ज्यादा। पॉकेट मनी को सही जगह खर्च करने और उम्र के हिसाब से पॉकेट मनी तय कर सकते हैं मिसाल के तौर पर पांचवीं क्लास के बच्चों को 10 रुपये रोज तक दिए जा सकते हैं। उससे बड़े बच्चों को 20-30 रुपये। इसी तरह जरूरत के हिसाब से इस रकम को कम-ज्यादा किया जा सकता है।

## बनाएं खुशहाल माहौल

यदि बच्चा टेंशन में है तो उसके आसपास के माहौल

को खुशहाल बनाकर टेंशन को घटाया जा सकता है। सबसे पहले ध्यान रखना चाहिए कि घर में माहौल सौहार्दपूर्ण रहे। यदि तब भी वह टेंशन में है तो पैरेंट्स को स्कूल, ट्यूशन और अन्य ऐसी जगहों, जहां बच्चे का रोजमर्रा में जाना होता है, वहां का माहौल देखना चाहिए। यदि कुछ गलत है तो फौरन कार्रवाई करें।

## रूटीन में करे बदलाव

बच्चा यदि टेंशन में है तो उसे फौरन उस कांडिशन से बाहर लाने की कोशिश शुरू कर देनी चाहिए। इसके लिए आप उसे किसी डांस क्लास, स्विमिंग आदि जैसी एक्टिविटी में आगे बढ़ा सकते हैं। उसे बाहर घूमने ले जा सकते हैं। इस तरह से रूटीन में बदलाव करने से उसका ध्यान दूसरी जगहों पर जाएगा और टेंशन में कमी आएगी।

## साइकायट्रिस्ट के पास जाएं

अक्सर लोग टेंशन के लिए साइकायट्रिस्ट के पास नहीं जाते क्योंकि वह साइकायट्रिस्ट के पास जाने को पागलपन से जोड़ने लगते हैं। यह गलत धारणा है। साइकायट्रिस्ट से सलाह करना पागलपन नहीं है। यदि टेंशन खत्म न हो तो बच्चे को साइकायट्रिस्ट के पास जरूर ले जाएं। साइकायट्रिस्ट अक्सर काउंसलिंग से ही स्थिति को कंट्रोल कर लेता है। यह काउंसलिंग बच्चे के साथ पैरेंट्स को भी दी जाती है। इससे बच्चे में तेजी से सुधार आता है।

## साइकायट्रिस्ट और साइकॉलजिस्ट में फर्क

अक्सर लोग साइकायट्रिस्ट और साइकॉलजिस्ट के बीच कन्फ्यूज हो जाते हैं और समझ नहीं पाते कि टेंशन को कंडिशन में किसके पास जाएं। साइकायट्रिस्ट दवाओं से मानसिक बीमारियों को ठीक करता है जबकि साइकॉलजिस्ट काउंसलिंग, साइको थेरपी, आईक्यू टेस्ट, पर्सनैलिटी टेस्ट आदि टेस्ट करता है। टेंशन की स्थिति में कोगनिटिव बिहेवियर थेरपी से काम चल जाता है। टेंशन होने पर साइकायट्रिस्ट या साइकॉलजिस्ट किसी के पास भी जाया जा सकता है।

## प्रेग्नेंसी में न लें टेंशन

प्रेग्नेंसी के दौरान यदि मां टेंशन में रहती है तो इसका असर पैदा होने वाले बच्चे पर भी पड़ सकता है। टेंशन को शिकार किसी भी महिला को सबसे पहले तो प्रेग्नेंसी में ही समस्या होती है। अगर प्रेग्नेंसी के दौरान भी टेंशन बना हुआ है तो इसका असर बच्चे के विकास पर भी पड़ सकता है। इसके अलावा पैदा होने के बाद भी उसमें कुछ बीमारियां हो सकती हैं। तनाव का उसके दिल पर बुरा असर पड़ सकता है। इसीलिए प्रेग्नेंसी के दौरान महिलाओं को टेंशन में नहीं रहना चाहिए। यदि कभी टेंशन की स्थिति आती है तो ऐसे में उन्हें जल्द ही इससे बाहर आने की कोशिश शुरू करनी चाहिए।

## योग करेगा टेंशन फ्री

योग इंसान को हेल्थी रखने महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और यह इंसान पॉजिटिव सोच वाला बनाता है और टेंशन की स्थिति से बचा रहता है। रोज योग के साथ-साथ ध्यान करने से बुद्धि तेज होती है, याददाश्त बढ़ती है, कॉम्पिडेंस बढ़ता है और बुरे वक्त में भी बैलेंस बना रहता है। ऐसे में आपको बच्चों को इसके लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। टेंशन में आप उनके साथ योग सीखने के लिए जा सकते हैं और बच्चे के साथ योग कर सकते हैं।

## कुछ टिप्स बच्चों के लिए

टेंशन में बच्चों को भी कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए और उससे बाहर आने के लिए उपाय खुद करने चाहिए। इन बातों का ध्यान रख बच्चे खुद भी टेंशन को मात दे सकते हैं टेंशन की स्थिति में किसी से बात करना बहुत जरूरी है। यदि आप भी किसी बात को लेकर परेशान हैं तो उसे अपने पैरेंट्स या किसी और से शेयर करना चाहिए। गेम्स बच्चों को टेंशन से फौरन बाहर लाते हैं। बच्चों को बाहर जाकर फिजिकल एक्टिविटी वाले गेम खेलने चाहिए। यदि आपको स्विमिंग पसंद है तो वह जरूर करनी चाहिए। इनडोर गेम्स में चैस, लुडो, कैरम आदि गेम्स टेंशन बस्टर साबित होते हैं। टेंशन में टीवी और मोबाइल से दूर रहना चाहिए। यदि आप टीवी देखने के शौकीन हैं तो कॉमिडो वाले प्रोग्राम देखें। ऐसे में क्राइम व सीरियस प्रोग्राम्स से बचना चाहिए। अगर पढ़ाई को लेकर टेंशन है तो टाइम टेबल बनाकर इससे निपटा जा सकता है। अगर आपको किसी दोस्त से लड़ाई हो गई है तो आपको खुद उससे बात कर लेनी चाहिए। दोस्ती में सारी गलतियां माफ़ होती हैं। रात को जल्दी सोना चाहिए और पूरी नींद लेनी चाहिए। तनाव में कैफ़ीन वाले ड्रिंक्स जैसे चाय, कॉफी, कोला आदि लेने से बचना चाहिए। यदि टेंशन बढ़ता जा रहा है तो डॉक्टर की मदद लेनी चाहिए।

## दिनचर्या के बिना छात्र का काम अस्त-व्यस्त हो जाता है, यदि शरीर ही अस्त-व्यस्त हो जाए तो दिमाग का स्तर भी कमजोर हो जाता है। हमारा मन पढ़ाई में नहीं लगता, अजिंदा, चिड़चिड़ापन आदि बमारियां हमें घेर लेती हैं, जिससे हमारे अध्यापन पर बुरा असर पड़ता है। विद्यार्थी जीवन में दिनचर्या का अपना विशेष महत्व होता है। दिनचर्या के बिना छात्र का काम अस्त-व्यस्त हो जाता है, दिनचर्या में सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक का कार्यक्रम कमबद्ध होना चाहिए। छात्र जीवन एक तपस्या है और बिना तपस्या के कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता। तप कर ही विद्यार्थी जीवन सफल होता है। विद्यार्थी जीवन में पवित्र व शाकाहारी भोजन होना चाहिए। वसायुक्त भोजन आपकी सेहत को खराब कर सकती है। दिनचर्या का अमल करना सभी के लिए साझे रूप से उपयोगी एवं स्वास्थ्यरक्षक सिद्ध होगा।

## खेलकूद का हो समय निश्चित

शाम को थोड़ा समय खेलकूद और मनोरंजन के लिए निश्चित रखें। टी.वी. ज्यादा न देखें, सिर्फ ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम ही देखें, ताकि नेत्र ज्योति खराब न हो और व्यर्थ समय नष्ट न हो। शाम का भोजन सोने से तीन घंटे पहले कर लिया करें, ताकि ठीक से हजम हो सके। सोते समय एक गिलास ठंडा किया हुआ दूध पी सकें तो अवश्य पिया करें। यदि आपका शरीर दुबला हो तो इसमें 1-2 चम्मच शहद घोलकर पिया करें। सोने से पहले कुल्ले (दन्त मंजन) करके मुंह साफकरना जरूरी है। शाम को 2.3 घंटे पढ़ाई करके 10 से 11 बजे के बीच सो जाया करें। सोते समय दिमाग से सोच-विचार हटाने के लिए अपनी सांस आने-जाने पर ध्यान लगाया करें। इससे नींद जल्दी और गहरी आती है। सोने से पहले हाथ, पैर, मुंह धो लिया करें। सोते समय यह संकल्प करें कि सुबह इतने बजे उठना है। इससे बिना अलार्म के भी ठीक उसी वक्त आपकी नींद खुल जाया करेगी, जितने बजे उठने का संकल्प करेंगे।



## दांतों को अच्छी तरह करें साफ

नित्यकर्म, मुख धोना, दन्त-मंजन करना, शौच जाना और स्नान करना, तथा व्यायाम से निवृत्त होकर पानी में भिगोए हुए चनों को खूब चबा-चबाकर खाना चाहिए। यह अत्यन्त पौष्टिक और बलवर्द्धक नाश्ता है। अपनी पढ़ाई करके स्कूल या कॉलेज का जो भी समय हो, उसके अनुसार सुबह-शाम के भोजन का समय निश्चित कर लें और निश्चित समय पर ही भोजन किया करें। भोजन करते समय मन को भोजन पर ही एकाग्र रखें, ताकि प्रत्येक कौर खूब अच्छी तरह से चबा-चबाकर निगल सकें।

## नित्यक्रिया से होता आभ्यांतरिक शुद्धि

सूर्योदय से पहले नित्यकर्मों से निवृत्त होने का उद्देश्य यह है कि वातावरण में सूर्य की गरमी फैले इससे पहले ही शौच क्रिया द्वारा मल शरीर से बाहर हो जाए और शीतल जल से स्नान करने से रात को सोने के कारण शरीर में बढ़ी गरमी दूर हो जाए, ताकि मलाशय, अमाशय, पाकाशय, मूत्राशय, शुक्राशय आदि पर व्यास हो जाने वाली अतिरिक्त उष्णता कम हो जाए। शरीर में अतिरिक्त उष्णता का होना या बढ़ना शरीर और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। सूर्योदय के बाद तक भी जो सोए रहते हैं, उनके शरीर के सभी अंग-प्रत्यंग बढ़ी हुई गरमी से ग्रस्त तो होते ही हैं, ऊपर से वातावरण में व्याप्त सूर्य की गरमी उसमें और वृद्धि कर देती है। इससे कई व्याधियां उत्पन्न होती हैं।

## भोजन के समय न करें बात

भोजन करते समय बातचीत करना इसीलिए वर्जित किया गया है, ताकि ध्यान भोजन पर और खाई जा रही तथा चबाई जा रही वस्तु पर ही केन्द्रित रहे। इस विधि से भोजन करने से पाचन ठीक होता है, अपच और कब्ज नहीं होती और गैसोज की शिकायत भी उत्पन्न नहीं होती। खाय-पिया अंग लगता है, जिससे शरीर पुष्ट, सुडौल और बलवान होता है।

प्रातः काल सूर्योदय से एक घंटा पहले उठकर नित्य कर्मों से निवृत्त होकर 15-20 मिनट व्यायाम या योगासनो का अभ्यास करने से सुस्ती व शिथिलता मिट जाती है और शरीर में चुस्ती,पुर्णी तथा तबीयत में ताजगी आ जाती है जिससे पढ़ाई में मन लगता है और पाठ अच्छी तरह याद होता है।



# सीधे फाइनल में खेलेंगे चोपड़ा-जेना, 75 मीटर क्वालीफाइंग स्तर कई बार पार कर चुके

एजेसी ►► मुंबई

भारत के भाला फेंक के स्टा र खिलाड़ी नीरज चोपड़ा और क्रिशीर जेना को यहाँ 15 मई को होने वाले फेडरेशन कप फाइनल्स में सीधे प्रवेश दिया गया है क्योंकि उन्होंने अपने करियर में 75 मीटर का न्यूनतम क्वालीफाइंग स्तर कई बार हासिल किया है।

ओलंपिक और विश्व चैंपियन चोपड़ा पिछले हफ्ते दोहा डायमंड लीग में काफी अच्छा प्रदर्शन करके यहाँ आए हैं जहाँ वह 88.38 मीटर के प्रयास से दूसरे स्थान पर रहे। हालाँकि एशियाई खेलों के रजत विजेता जेना का डायमंड लीग में पदार्पण निराशाजनक रहा क्योंकि वह 76.31 मीटर के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ तीन दौर के बाद बाहर हो गए। विश्व चैंपियनशिप 2023 में छठे स्थान पर रहे डोपी मनु की नजरें 85.50 मीटर के स्तर को पार करके पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने पर टिकी होंगी और वह भी सीधे फाइनल में प्रतिस्पर्धा करेंगे।



**नीरज के खेलने से एफआई खुश**  
एफआई 26 वर्षीय चोपड़ा के तीन साल में पहली बार घरेलू प्रतियोगिता में खेलने को



**लेकर काफी उत्सुक है। एफआई के एक शीर्ष अधिकारी ने बताया, 'एफआई नीरज के फेडरेशन कप में हिस्सा लेने से बिल्कुल**

**भी हैरान नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं कि घरेलू प्रतियोगिता में उनकी भागीदारी भारतीय एथलेटिक्स के लिए बहुत अच्छी बात है।'**

## सीधे फाइनल खेलेंगे नौ खिलाड़ी

भारतीय एथलेटिक्स के मुख्य कोच राधाकृष्णन नारयण ने भारतीय एथलेटिक्स महासंघ के क्वालीफिकेशन नियमों का हवाला देते हुए कहा, 'वे सभी जो 75 मीटर के स्तर को पार कर चुके हैं, वे मंगलवार को क्वालीफाइंग स्तर से प्रतिस्पर्धा नहीं करेंगे। जिन लोगों ने प्रतियोगिता दी है उनमें नीरज और जेना सहित ऐसा करने वाले नौ खिलाड़ी हैं। वे सीधे बुधवार को फाइनल में प्रतिस्पर्धा करेंगे। 75 मीटर से कम जो करने वाले बाकी खिलाड़ी क्वालीफाइंग स्तर से प्रतिस्पर्धा करेंगे और शीर्ष तीन खिलाड़ी फाइनल में 75 मीटर से ऊपर भाला फेंकने वाले नौ खिलाड़ियों के साथ प्रतिस्पर्धा करेंगे।'

## जल्द वापसी करेंगे रमेश

नारयण ने पुरुषों की चार गुणा 400 मीटर रिले टीम के सदस्य राजेश रमेश की चोट को अधिक तूल नहीं दिया जो इस महीने की शुरुआत में बहामास में पहले दौर की क्वालीफाइंग राउंड के दूसरे चरण के दौरान बीव में ही हट गए थे। नारयण ने कहा, 'रमेश की चोट पैर की मांसपेशियों में खिंचाव नहीं है, यह जांच में टेडन से संबंधित है। इसलिए यह कोई बड़ी चोट नहीं है। उसके 10-15 दिनों में ट्रेनिंग शुरू करने की उम्मीद है। राजीव भी जल्द ही ठीक हो जाएगा। ओलंपिक की तैयारी में कोई विकलत नहीं होगी चाहे।'

## मिश्रित रिले टीम से कोटा की उम्मीद

नारयण ने यह भी कहा कि विश्व रिले के दौरान बहामास में विफलता के बावजूद एफआई को अब भी मिश्रित चार गुणा 400 मीटर रिले टीम के पेरिस खेलों के लिए क्वालीफाई करने की उम्मीद है। हालाँकि अब केवल दो स्थान बचे हैं। उन्होंने कहा, 'हमारी मिश्रित चार गुणा 400 मीटर टीम एशियाई रिले (20-21 मई को बैंकोक में) में भाग लेगी और अगर हम तीन मिनट 14 सेकंड से कम का समय पते हैं तो हम पेरिस के लिए क्वालीफाई कर सकते हैं और हमें लगत है कि हम ऐसा कर सकते हैं।'

## आईपीएल पाइंट टेबल

टीम	मैच	जिते	हारे	अंक
कोलकाता	13	9	3	19
राजस्थान	12	8	4	16
चेन्नई	13	7	6	14
दिल्ली	12	7	5	14
बिड़र	13	6	7	12
मुंबई	13	6	7	12
पंजाब	13	5	7	11
गुजरात	13	4	9	8
सौराष्ट्र	13	4	9	8

## ऑरेंज केप



**विराट कोहली**  
**661 रन**  
बेंगलोर

**जसप्रीत बुमराह**  
**20 विकेट**  
मुंबई

## बाउंड्री मीटर

**1913 चौके**

**1105 छक्के**

## चोटिल हुए टंडन, दूसरे मैच के बीच से हटे

काहिरा। भारत के रमित टंडन को रविवार को यहाँ स्क्वाश विश्व चैंपियनशिप के दूसरे दौर में चोटिल होने के कारण दुनिया के सातवें नंबर के खिलाड़ी मोहम्मद अलशोरबागी के खिलाफ मुकाबले के बीच से हटना पड़ा। विश्व रैंकिंग में 36वें स्थान के साथ भारत के शीर्ष रैंकिंग के खिलाड़ी टंडन दूसरे गेम में जब 3-4 से पीछे थे तब पिंडली की टीम के कारण उन्हें मैच के बीच से हटना पड़ा। पूर्व विश्व चैंपियन अलशोरबागी ने पहला गेम 11-8 से जीता था। दुनिया के पूर्व नंबर एक खिलाड़ी के खिलाफ टंडन का यह पहला मैच था।

## इंग्लैंड लौटे पंजाब के लिविंगस्टोन

नई दिल्ली। पंजाब क्रिकेट के हरफनमौला खिलाड़ी लियाम लिविंगस्टोन अगले महीने होने वाले टी20 विश्व कप से पहले घुटने की चोट से उबरने के लिए सोमवार को इंग्लैंड लौट आए। पंजाब क्रिकेट की टीम 12 मैच में सिर्फ चार जीत के साथ पहले ही इंडियन प्रीमियर लीग के प्ले ऑफ की दौड़ से बाहर हो चुकी है और अभी आठ अंक के साथ अंक तालिका में अंतिम स्थान पर है। लिविंगस्टोन ने इंस्टाग्राम पर लिखा, 'आईपीएल का एक और साल हो गया, आगामी विश्व कप के लिए अपने घुटने को ठीक कराना पड़ेगा।'

## आरसीबी ने नतीजे देने की क्षमता दिखाई

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व ऑलराउंडर टॉम मूडी ने आईपीएल में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की लगातार पांचवीं जीत के बाद कहा कि टीम ने जब सबसे अधिक मायने रखता है तब प्रदर्शन करने की अपनी क्षमता दिखाई है। मूडी ने कहा, 'एक बार फिर आरसीबी ने जरूरत पड़ने पर अच्छा प्रदर्शन करने की अपनी क्षमता दिखाई जिससे दोनों टीमों के बीच एक रोमांचक मुकाबले का मंच तैयार हो गया।' आरसीबी की टीम शनिवार को एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में अपने अंतिम लीग मैच में चेन्नई सुपरकिंग्स से भिड़ेगी जो प्लेऑफ में जगह बनाने की दौड़ में बनी हुई है।



शामिल किया गया है। नीदरलैंड की टीम 2022 में टी20 विश्व कप और पिछले साल एकदिवसीय विश्व कप के बाद यह लगातार तीसरी बार आईसीसी की प्रतियोगिता में भाग ले रही है। टीम टी20 विश्व कप अतिथियों की शुरुआत चार जून को इटाली में नेपाल के खिलाफ करेगी।

## आईपीएल : मैच का प्रसारण स्टार स्पोर्ट्स पर शाम 7.30 बजे

# लखनऊ और कैपिटल्स में प्लेऑफ की दौड़ में आगे निकलने की होड़

एजेसी ►► नई दिल्ली

खराब फॉर्म से जूझ रही लखनऊ सुपर जाइंट्स की टीम आईपीएल प्लेऑफ के लिए क्वालीफाई करने की उम्मीदें जीवंत रखने के लिए मंगलवार को यहाँ दिल्ली कैपिटल्स से भिड़ेगी जिसकी नॉकआउट में जगह बनाने की मामूली उम्मीद बरकरार है।

सुपर जाइंट्स के कप्तान के रूप में लोकेश राहुल के भविष्य को लेकर काफी अटकलें लगाई जा रही हैं क्योंकि बुधवार को सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ 10 विकेट की हार के बाद टीम के मालिक संजीव गोयनका ने उन्हें सार्वजनिक तौर पर फटकार लगाई थी। इस तरह की अटकलें हैं कि राहुल पद छोड़ सकते हैं या टीम का साथ छोड़ने से पहले अंतिम दो मैच में कप्तानी की जिम्मेदारी निभा सकते हैं। दोनों ही स्थितियों में यह भारतीय बल्लेबाज बल्ले से जवाब देकर सत्र का शानदार अंत करना चाहेगा।

राहुल काफी अच्छी फॉर्म में नहीं हैं और भारत की टी20 विश्व कप टीम में भी जगह नहीं बना पाए हैं। लखनऊ की टीम भी 12 अंक के साथ सातवें स्थान पर चल रही है और दिल्ली तथा रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के साथ अभी शीर्ष चार से बाहर है। दिल्ली और आरसीबी के भी 12-12 अंक हैं।



## दिल्ली में पंत की वापसी

दिल्ली की टीम को एक मैच के बिलंब के बाद कप्तान ऋषभ पंत की वापसी से मजबूती मिलेगी। टीम को सुपर जाइंट्स के खिलाफ क्षेत्ररक्षण में सुधार करना होगा क्योंकि टीम ने आरसीबी के खिलाफ कई कैच टपकाए। गेंदबाजों ने आरसीबी के बल्लेबाजों को अच्छी शुरुआत

करने का मौका दिया जबकि उसके बल्लेबाजों ने पावर प्ले में चार ओवर के भीतर ही चार विकेट गंवा दिए जिससे टीम मौजूदा आईपीएल में 140 रन के अपने न्यूनतम स्कोर पर सिमट गई। दिल्ली ने हालाँकि मौजूदा सत्र में चार बार 200 से अधिक रन बनाए हैं और टीम को यह प्रदर्शन दोहराने की उम्मीद होगी जिससे कि प्ले ऑफ में जगह बनाने की उम्मीद बरकरार रख सके।

## प्लेऑफ की दौड़ से बाहर गुजरात, केकेआर से मैच बारिश में धुला

अहमदाबाद। गुजरात टाइटन्स की इंडियन प्रीमियर लीग प्लेऑफ के लिये क्वालीफाई करने की उम्मीदों पर सोमवार को पानी फिर लया जब कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ उसका 'करो या मरो' का मुकबला बारिश के कारण रद्द हो गया। केकेआर के अब 13 मैचों में 19 अंक हैं और उसका शीर्ष दो में रहना तय है। वहीं गुजरात 13 मैचों में 11 अंक लेकर प्लेऑफ की दौड़ से बाहर है। लगातार खिलती कड़कने और हल्की बूढ़ाबादी के कारण टॉस सात बजे नहीं हो सका। धीरे धीरे बारिश तेज होती चली गई। प्रति टीम पांच ओवर का मैच कराने के लिये कटआफ समय 10 बजकर 56 मिनट था लेकिन अधिकारियों ने लगातार छो रहीं तेज बारिश और गीली आउटफ़ील्ड के कारण मैच रद्द करने का फैसला किया जो आईपीएल के इस सत्र में पहली बार हुआ है। पिछले मैच में मुंबई इंडियंस को हराते के बाद केकेआर प्लेऑफ में जगह बना चुका है। रॉयल 12 मैचों में 16 अंक लेकर दूसरे और गत चैंपियन चेन्नई सुपर किंग्स 13 मैचों में 14 अंक लेकर तीसरे स्थान पर है।

## पाकिस्तान ने आयरलैंड को सात विकेट से हराया



एजेसी ►► डबलिन

पाकिस्तान ने पहले टी20 की हार का बदला चुकता करते हुए दूसरे मैच में आयरलैंड को सात विकेट से हराकर तीन मैच की श्रृंखला 1-1 से बराबर कर दी। शुक्रवार को आयरलैंड ने पहले टी20 में पाकिस्तान को पांच विकेट से हराया था। यह आयरलैंड की टी20 प्रारूप में पाकिस्तान पर पहली जीत थी। रविवार को टॉस हारकर बल्लेबाजी करने उतरे आयरलैंड के लोर्कान टकर और हेरी टेकर (32) ने तीसरे विकेट के लिए 62 रन जोड़कर पारी को संभाला। टकर ने 34 गेंद में 51 रन बनाए। टीम ने सात



## एथलेटिको ने सेल्टा विगो को हराया

मैड्रिड। एथलेटिको मैड्रिड रविवार को यहाँ स्पेनिश फुटबॉल लीग में सेल्टा विगो पर 1-0 की जीत के साथ चैंपियंस लीग फुटबॉल के चौथे और अंतिम स्थान के लिए क्वालीफाई करने की दौड़ में आगे बढ़े। एथलेटिको की ओर से मैच का एकमात्र गोल 84वें मिनट में रोड्रिगो डि पॉल ने किया। इस जीत से एथलेटिको ने पांचवें स्थान पर मौजूद एथलेटिक बिलबाओ पर आठ अंक की बढ़त बना ली है जबकि सिर्फ तीन दौर का खेल बाकी है। एथलेटिक बिलबाओ ने शनिवार को ओसासुना से 2-2 से ड्रॉ खेला था।

## नडाल के बाद अब इटैलियन ओपन में जोकोविच भी हारे

एजेसी ►► रोम

नोवाक जोकोविच रविवार को यहाँ इटैलियन ओपन के तीसरे दौर में 29वें वरीय एलेजांद्रो टैंबिलो से उलटपेच का शिकार होकर अपने पर्सदीदा टूर्नामेंट में से एक से बाहर हो गए। शुक्रवार को एक प्रशंसक को ऑटोग्राफ देते हुए उसकी पानी की बोतल जोकोविच के सिंपर पर लग गयी थी, जिसके बाद यह उनका पहला मैच था। जोकोविच ने एक 'डबल फॉल्ट' से शुरुआत की और छह बार का



चैंपियन इसके बाद उबर नहीं सका। जोकोविच महज 68 मिनट में टैंबिलो से 2-6, 3-6 से हार गए। तीसरे दौर में मिलो हार जोकोविच का इटैलियन ओपन में सबसे खराब प्रदर्शन है। एक दिन पहले रिफॉर्ड 10 बार के चैंपियन राफेल नडाल भी तीसरे दौर में ह्यूबर्ट हुकाज से हारकर बाहर हो गये थे।

## मलेशिया के खिलाफ भारतीय जोड़ी का मुकाबला आज थाईलैंड ओपन में भारत की अगुवाई करेंगे सात्विक-चिराग

एजेसी ►► बैंकॉक

सात्विकसाईराज रंकोरेड्डी और चिराग शेट्टी की स्टा पुरुष युगल जोड़ी मंगलवार से यहाँ शुरू हो रहे थाईलैंड ओपन सुपर 500 टूर्नामेंट में भारतीय चुनौती की अगुवाई करेंगे। पेरिस ओलंपिक में स्वर्ण पदक का दवेदार भारत की इस शीर्ष वरीय जोड़ी को थॉमस कप में इंडोनेशिया और चीन के खिलाड़ियों की सर्विस का सामना करने में थोड़ी मुश्किल हुई थी। सात्विक और चिराग की जोड़ी अपने अभियान की शुरुआत नूर मोहम्मद अज़रिन अयूब अज़रिन और टेन वी कियोंग की मलेशिया



की जोड़ी के खिलाफ करेगी तो उनकी नजरें अपने प्रदर्शन में सुधार पर टिकी होंगी। पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर चुके खिलाड़ियों ने अपने कौशल को निखारने पर काम किया है और बीडब्ल्यूएफ विश्व टूर प्रतियोगिताओं में उन्हें अपने नए शॉट और बदलाव को परखने का शानदार मौका मिलेगा।

## प्रणय एकल में देंगे चुनौती

विश्व चैंपियनशिप और एशियाई खेलों के कांस्य पदक विजेता भारत के शीर्ष एकल खिलाड़ी एचएस प्रणय को मौजूदा सत्र में स्वास्थ्य समस्याओं से जूझने के बाद लय हासिल करनी होगी। इंडोनेशिया के संथेनी गिनटिन के खिलाफ जीत से प्रणय का आत्मविश्वास बढ़ा होगा लेकिन चीन के शी युकी के खिलाफ हार से वह परेशान होंगे क्योंकि उन्हें करीबी मुकाबले जीतने की जरूरत है। किरण जॉर्ज और सतीश कुमार करुणाकरण भी एकल वर्ग में चुनौती पेश कर रहे हैं। किरण को पहले दौर में चीन के ऑस्ट्रेलिया ओपन विजेता वेंग होंग वेंग से भिड़ना है जबकि सात्विक अपने अभियान की शुरुआत क्वालीफायर के खिलाफ करेंगे।

## अशिमता, मालविका और आकर्षा पर नजर

सिंधू की गैरमौजूदगी में महिला एकल में भारत की नजरें अशिमता मालविका बंसोड़ और आकर्षा कश्यप पर रहेंगी। अशिमता को पहले दौर में इंडोनेशिया की इस्टर नुरुन्नी त्री वादरयो से भिड़ना है जबकि मालविका को चीन की शीर्ष वरीय हेंग युई के खिलाफ खेलना है। आकर्षा का सामना पहले दौर में थाईलैंड की बुसान ओंगक्षेमरंगफान से होगा। युवा उन्नति हुडा और इनाद फारुकी को भी कश्मि: बेलिजयम की लियाने टेन और चीन की गोवा फेंग जेई के खिलाफ अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद होगी। महिला युगल में पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर चुकी तनीषा करती और अशिमता पोनप्पा को चौथे वरीय भारतीय जोड़ी को पहले दौर में बाई मिली है।



## स्वर संक्षेप

हुंडई ने लक्ष्मी समूह के साथ की साझेदारी



नई दिल्ली। हुंडई मोटर इंडिया ने लक्ष्मी समूह के सहयोग से नेपाल में अपनी कॉम्पैक्ट एसयूवी वेन्यू को स्थानीय स्तर 'असेंबल' करना शुरू कर दिया है। 'असेंबल' से तात्पर्य वाहन के निर्मित कलपुर्जों को जोड़ने से है। यह संयंत्र नेपाल में पहली मोटर वाहन 'असेंबली' सुविधा है। इसकी वार्षिक स्थापित क्षमता 5,000 इकाई है।

एमिरेट्स को 2023 में 4.7 अरब डॉलर का लाभ



दुबई। विमानन कंपनी एमिरेट्स ने 2023 में 4.7 अरब अमेरिकी डॉलर का रिकॉर्ड मुनाफा दर्ज किया। दुबई सरकार के स्वामित्व वाली एमिरेट्स ने सोमवार को बताया, '2023 में राजस्व अरब अमेरिकी डॉलर का राजस्व दर्ज किया। 2022 में राजस्व 29.3 अरब अमेरिकी डॉलर और लाभ 2.9 अरब अमेरिकी डॉलर था।'

टाटा मोटर्स का शेयर आठ प्रतिशत टूटा



नई दिल्ली। टाटा मोटर्स का शेयर सोमवार को आठ प्रतिशत से अधिक टूट गया। कंपनी के जनवरी-मार्च तिमाही के नतीजे के निवेशकों के उम्मीद के अनुरूप न होने पर इसके शेयर में गिरावट आई है। बीएसई पर कंपनी का शेयर 8.32 प्रतिशत गिरकर 959.80 रुपये पर बंद हुआ। दिन में यह 9.44 प्रतिशत गिरकर 948 रुपये पर आ गया था।

जोमैटो ने 175 करोड़ रुपए का लाभ कमाया



नई दिल्ली। ऑनलाइन ऑर्डर लेकर खाना पहुंचाने वाली कंपनी जोमैटो लिमिटेड ने बीते वित्त वर्ष की मार्च में समाप्त चौथी तिमाही 175 करोड़ रुपए का एकीकृत शुद्ध लाभ कमाया है। जोमैटो लिमिटेड ने शेयर बाजार को यह जानकारी दी। इससे पिछले वित्त वर्ष की समाप्त तिमाही में कंपनी को 188 करोड़ रुपये का एकीकृत शुद्ध घाटा हुआ था।

वेडरा करेगी 450 करोड़ रुपए का निवेश



नई दिल्ली। उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स एवं उपकरण विनिर्माता वेडरा ग्रेंटर नोएडा में एक नई विनिर्माण इकाई स्थापित करने के लिए 450 करोड़ रुपये का निवेश करेगी। कंपनी का मकसद उत्पादन क्षमता बढ़ाना है। इस निवेश से वॉशिंग मशीन और एयर कूलर की मौजूदा उत्पादन क्षमता सालाना एक लाख से बढ़कर पांच लाख इकाई हो जाएगी।

रुलका इलेक्ट्रिकल्स का आईपीओ 16 को



नई दिल्ली। रूलका इलेक्ट्रिकल्स आईपीओ के जरिये 26 करोड़ रुपये से अधिक जुटाने के लिए बृहस्पतिवार को बाजार में उतरेगी। मुंबई स्थित एकीकृत इलेक्ट्रिकल सेवा कंपनी ने सोमवार को बताया कि आईपीओ के लिए मूल्य-दायरा 223-235 रुपये प्रति शेयर तय किया गया है। आईपीओ 16 मई को खुलेगा और 21 मई को बंद होगा। कंपनी के शेयर एनएसई के एस्पएसई मंच इमर्ज पर सूचीबद्ध किए जाएंगे। आईपीओ में 8.42 लाख के नए शेयर जारी किए जाएंगे। इसमें 2.8 लाख शेयरों की बिक्री पेशकशी भी शामिल है।

# मोदी सरकार के कार्यकाल में कुल 51.40 करोड़ को मिला रोजगार : स्कॉच रिपोर्ट

एजेसी ►► नई दिल्ली

घरेलू शोध संस्थान स्कॉच की एक रिपोर्ट में सोमवार को दावा किया गया कि नरेंद्र मोदी सरकार के 10 वर्षों के शासनकाल में 51.40 करोड़ व्यक्ति-वर्ष रोजगार पैदा हुए हैं। मानव-वर्ष या व्यक्ति-वर्ष एक साल में किसी व्यक्ति द्वारा किए गए कार्य की मात्रा को घंटों में आंकने वाली एक इकाई है।

'मोदीनामिक्स का रोजगार सृजनात्मक प्रभाव: प्रतिमान में बदलाव' शीर्षक से जारी यह रिपोर्ट 80 केस अध्ययन पर आधारित है। इसमें कर्ज लेने वाले उधारकर्ताओं और विभिन्न सरकारी योजनाओं के आंकड़ों को शामिल किया गया है।

## 'मोदीनामिक्स का रोजगार सृजनात्मक प्रभाव: प्रतिमान में बदलाव' नाम से रिपोर्ट जारी

जुटाए 80 केस अध्ययन के दस्तावेज

बयान के मुताबिक, वर्तमान अध्ययन से यह भी पता चलता है कि सूक्ष्म कर्ज का हस्तांतरण स्थिर और टिकाऊ रोजगार सृजन के लिए किया जा रहा है। स्कॉच ग्रुप के चेयरमैन और इस रिपोर्ट के लेखक समीर कोचर ने कहा, 'हमने अपने दौरों में 80 केस अध्ययन के दस्तावेज जुटाए हैं। इसमें कर्ज लेने वाले कई उधारकर्ताओं को शामिल किया गया है और एक कर्ज राशि पर औसतन 6.6 प्रत्यक्ष रोजगार पैदा हुए हैं।'



### अध्ययन में 12 केंद्रीय योजनाएं शामिल

इस अध्ययन में 12 केंद्रीय योजनाओं को शामिल किया गया है। इनमें मनरेगा, पीएमजीएसवाई, पीएमए-जी, पीएमएसवाई-यू, आरएसईटीआई, एबीआरवाई, पीएमईजीपी, एसबीएम-जी, पीएलआई और पीएम स्वनिधि जैसी योजनाएं शामिल हैं।

### ऋण अंतराल में गिरावट

अध्ययनों से पता चलता है कि पिछले नौ वर्षों में ऋण अंतराल (जीडीपी के अनुपात में कर्ज का अंतर) में 12.1 प्रतिशत की गिरावट आई है। इसने ऋण अंतराल में कटौती, बहुआयामी गरीबी में कमी और एमएसडीपी में वृद्धि के बीच एक सकारात्मक संबंध भी दिखाया है।

## 19.79 करोड़ रोजगार शासन-आधारित

स्कॉच ग्रुप ने एक बयान में कहा, वर्ष 2014-24 के दौरान कुल 51.40 करोड़ रोजगार पैदा हुए हैं। इनमें 19.79 करोड़ रोजगार शासन-आधारित हस्तक्षेपों की वजह से गुंजित हुए हैं। बाकी 31.61 करोड़ रोजगार में ऋण-आधारित हस्तक्षेपों का योगदान रहा है। स्कॉच ग्रुप सामाजिक-आर्थिक मुद्दों पर काम करने वाला एक घरेलू शोध संस्थान है। यह 1997 से ही समावेशी विकास पर काम कर रहा है।

### ऋण-आधारित रोजगार

कोचर ने कहा, 'हमने 2014-24 की अवधि में ऋण-आधारित हस्तक्षेपों और सरकार-आधारित हस्तक्षेपों का अध्ययन किया है। जहां ऋण-आधारित हस्तक्षेपों ने प्रति वर्ष औसतन 3.16 करोड़ रोजगार जोड़े हैं, वहीं सरकार-आधारित हस्तक्षेपों ने 1.98 करोड़ रोजगार पैदा हुए हैं।'

निपटी 48.85 अंक के साथ 22,104.05 अंक पर बंद हुआ

# शेयर बाजार में भारी उठापटक, अंतिम घंटे की लिवाली से सेंसेक्स 112 अंक चढ़ा

एजेसी ►► मुंबई

शुरुआती गिरावट से उबरते हुए तीस शेयरों पर आधारित सेंसेक्स 111.66 अंक यानी 0.15 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 72,776.13 अंक पर बंद हुआ। कमजोरी के साथ खुला सूचकांक कारोबार के दौरान एक समय 798.46 अंक यानी 1.09 प्रतिशत की बड़ी गिरावट के साथ 71,866.01 अंक पर आ गया था। लेकिन बाद में निचले स्तर पर लिवाली आने से यह नुकसान से उबरने में सफल रहा। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का सूचकांक निपटी भी 48.85 अंक यानी 0.22 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 22,104.05 अंक पर बंद हुआ। सूचकांक एक समय 21,821.05 अंक के निचले स्तर तक आ गया था।

### लाभ और हानि में रही कंपनियां

सेंसेक्स के शेयरों में दक्षिण पेट्रोल, रिलायंस, एचडीएफसी बैंक, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, एक्सिस बैंक, टाटा स्टील, जेएसडब्ल्यू स्टील, लार्सन एंड टुब्रो, आईसीआईसीआई बैंक और पावरग्रिड प्रमुख रूप से लाभ में रहे। दूसरी तरफ टाटा मोटर्स में सबसे ज्यादा आठ प्रतिशत से अधिक की गिरावट आई। कंपनी का 31 मार्च, 2024 को समाप्त चौथी तिमाही में एकीकृत शुद्ध लाभ तीन गुना उछलकर 17,528.59 करोड़ रुपये होने की सूचना के बाद भी इसका शेयर नुकसान में रहा। इसके अलावा एलटीपीसी, भारतीय एयरटेल, टाइटन, भारतीय स्टेट बैंक और नेस्ले में प्रमुख रूप से गिरावट रही।

स्थानीय शेयर बाजारों में सोमवार को भारी उतार-चढ़ाव के बीच बीएसई सेंसेक्स 111 अंक से अधिक की वृद्धि में रहा। एनएसई निपटी में भी तेजी रही। मुख्य रूप से एचडीएफसी बैंक, आईसीसीआईसीआई बैंक और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज में अंतिम दौर की लिवाली आने से बाजार लाभ में रहा।

### अन्य बाजारों में नुकसान

एशिया के अन्य बाजारों में दक्षिण कोरिया का कॉस्पी, जापान का निकेई और चीन का शेनशेन इंडेक्स नुकसान में जबकि हंगकॉंग का हैंगसेंग इंडेक्स में रहा। यूरोप के प्रमुख बाजारों में शुरुआती कारोबार में ज्यादातर में गिरावट का रुख रहा। अमेरिकी बाजार वॉल स्ट्रीट शुक्रवार को बंद में रहा था।



### चुनाव की वजह से निवेशक फिक्रमंद

जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विवेक नायर ने कहा, 'भले ही बाजार दिन के निचले स्तर से उबर रहा और हल्की वृद्धि के साथ बंद हुआ लेकिन निवेशक लोकसभा चुनावों से जुड़ी आशंकाओं और ऊंचे मूल्यंकन की वजह से फिक्रमंद हैं। नायर ने कहा कि किसी बड़े सकारात्मक कारक के अभाव और विदेशी संस्थान निवेशकों की पूंजी निकासी जारी रहने से घरेलू बाजार अल्पवधि में कमजोर बना रह सकता है।

### 2,117.50 करोड़ के शेयर बेचे

शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थान निवेशकों ने शुक्रवार को 2,117.50 करोड़ रुपये मूल्य के शेयर बेचे। वैश्विक तेल मानक बेंट कूड का भाव 0.28 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 83.02 डॉलर प्रति बैरल पर रहा। बीएसई सेंसेक्स शुक्रवार को 260.30 अंक लाभ में जबकि निपटी 97.70 अंक की वृद्धि में रहा था।

### हल्की वृद्धि लेने में सफल

रेलिवेयर ब्रोकिंग लिमिटेड के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अजित मिश्रा ने कहा, 'कारोबार सप्ताह की शुरुआत उतार-चढ़ाव के साथ हल्की वृद्धि अंत में यह हल्की वृद्धि लेने में सफल रहा। आसकर दिग्गज कंपनियों में डरौदारी ने सूचकांक को दिन के ऊपरी स्तर के करीब बंद होने में मदद की।

### गिडकैप सूचकांक में बढ़त

व्यापक बाजार में बीएसई गिडकैप सूचकांक 0.36 प्रतिशत की वृद्धि में रहा जबकि स्मॉलकैप में 0.23 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। विशेषज्ञों का मानना है कि बाजार में इस अनिश्चितता का संबंध लोकसभा चुनावों के चौथे चरण में हुए मतदान से भी है। क्षेत्रवार सूचकांकों में सेवा खंड में सर्वाधिक 1.41 प्रतिशत और रियल्टी खंड में 1.32 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई जबकि टिकाऊ उपभोक्ता और दूरसंचार खंड में गिरावट रही।

## विदेशी निवेशकों ने 10 दिन में निकाले 17,083 करोड़

एजेसी ►► नई दिल्ली

विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने मई के पहले 10 दिन में घरेलू शेयर बाजारों से 17,083 करोड़ रुपए की निकासी की है। चुनाव के नतीजों को लेकर अनिश्चितता के बीच ऊंचे मूल्यंकन और मुनाफा वसूली के लिए विदेशी निवेशक घरेलू बाजारों से निकासी कर रहे हैं।

इससे पहले अप्रैल में मॉरीशस के साथ भारत की कर संधि में बदलाव और अमेरिका में बॉन्ड पर रिटर्न बढ़ने से एफपीआई ने 8,700 करोड़ रुपये की शुद्ध निकासी की थी। इस तरह, एफपीआई मई के पहले 10 दिन में ही अप्रैल से अधिक की निकासी कर चुके हैं। एफपीआई ने मार्च में 35,098 करोड़ और फरवरी में 22,419 करोड़ रुपये और जनवरी में 19,836 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश किया था। माना जा रहा

### गोल्ड ईटीएफ से निकले 396 करोड़

गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) से अप्रैल में 396 करोड़ रुपये की शुद्ध निकासी हुई है। निवेशकों के मुनाफा काटने की वजह से यह निकासी हुई है। हालांकि मार्च में इसमें 373 करोड़ रुपये का प्रवाह हुआ था। एक्सचेंजिस्टर ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एफपी) के आंकड़ों के मुताबिक, इस निकासी के बावजूद अप्रैल के अंत में गोल्ड ईटीएफ के प्रबंधन के तहत परिपंक्ति (एसयूएल) पांच फीसदी बढ़कर 32,789 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गई। मार्च में गोल्ड ईटीएफ का एसयूएल 31,224 करोड़ रुपये रहा था।



### चुनावी माहौल से एफपीआई में अनिश्चितता

है कि चुनाव के बाद घरेलू कंपनियों के मजबूत वित्तीय नतीजों की वजह से एफपीआई भारतीय बाजार में निवेश बढ़ाएंगे।

### बॉन्ड बाजार से 1,602 करोड़ रुपए की निकासी

एफपीआई ने शेयरों के अलावा ऋण या बॉन्ड बाजार से भी 1,602 करोड़ रुपये निकाले हैं। इससे पहले मार्च में बॉन्ड बाजार में 13,602 करोड़ रुपये, फरवरी में 22,419 करोड़ रुपये और जनवरी में 19,836 करोड़ रुपये का निवेश किया था।

## केपीआई वीन एनर्जी जुटाएगी 1000 करोड़ रुपए का कोष



नई दिल्ली। केपीआई वीन एनर्जी ने सोमवार को कहा कि उसके निदेशक मंडल ने पात्र संस्थागत नियोजन के जरिए शेयर जारी कर 1,000 करोड़ रुपये तक की राशि जुटाने के प्रस्ताव को स्वीकृति दे दी है।

## अप्रैल में खुदरा मुद्रास्फीति घटकर 4.83 प्रतिशत पर

नई दिल्ली। रसोई में इस्तेमाल होने वाली कई वस्तुओं के दाम घटने से अप्रैल में खुदरा मुद्रास्फीति मामूली घटकर 4.83 प्रतिशत पर आ गई। सोमवार को जारी सरकारी आंकड़ों से यह जानकारी मिली है। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) पर आधारित खुदरा मुद्रास्फीति मार्च में 4.85 प्रतिशत के स्तर पर थी जबकि अप्रैल, 2023 में यह 4.3 प्रतिशत थी। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल में खाद्य वस्तुओं की खुदरा मुद्रास्फीति मामूली बढ़ोतरी के साथ 8.70 प्रतिशत रही। एक महीने पहले मार्च में यह 8.52 प्रतिशत के स्तर पर थी।

नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में सक्रिय कंपनी ने शेयर बाजार को इस फेरुले की सूचना देते हुए कहा कि इस प्रस्ताव को अब शेयर धारकों की मंजूरी के लिए रखा जाएगा। गुजरात में स्थित केपीआई वीन एनर्जी लिमिटेड (पूर्व में केपीआई वीन) एक अग्रणी नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन कंपनी है।

## म्यूचुअल फंड में पूर्वोत्तर की हिस्सेदारी चार साल में बढ़कर 40,000 करोड़ पार

एजेसी ►► नई दिल्ली

देश में कुल म्यूचुअल फंड परिसंपत्तियों में पूर्वोत्तर की हिस्सेदारी पिछले चार साल में दोगुनी से अधिक होकर मार्च, 2024 में 40,324 करोड़ रुपये पर पहुंच गई। इका एनालिटिक्स की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि शेयरों में निवेश करने के लिए खुदरा निवेशकों के बीच बढ़ती जागरूकता के चलते यह वृद्धि हुई।



म्यूचुअल फंड उद्योग की प्रबंधन के तहत कुल औसत संपत्तियों में अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नगालैंड और त्रिपुरा की संयुक्त हिस्सेदारी मार्च, 2020 में 0.67 प्रतिशत थी।

म्यूचुअल फंड का उद्योग 55.01 लाख करोड़ रुपए होगा मार्च, 2020 में इन राज्यों का संपत्ति आधार 16,446 करोड़ रुपये था, जो इस साल मार्च में बढ़कर 40,324 करोड़ रुपये हो गया। इस दौरान म्यूचुअल फंड उद्योग का कुल एएसएल 24.71 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 55.01 लाख करोड़ रुपये हो गया।

## भारत में एसयूवी खंड का विस्तार जारी रखेगी सुजुकी

एजेसी ►► नई दिल्ली/टोक्यो

जापान की कार विनिर्माता सुजुकी मोटर कॉर्पोरेशन यात्री वाहन खंड में अपनी समग्र बाजार हिस्सेदारी फिर हासिल करने के लिए भारत में एसयूवी खंड का विस्तार जारी रखेगी। कंपनी की वर्तमान में मारुति सुजुकी इंडिया में करीब 58 प्रतिशत हिस्सेदारी है। पिछले वित्त वर्ष 2023-24 में उसकी शुद्ध बिक्री 15.8 प्रतिशत बढ़ी। परिचालन लाभ भी सालाना आधार पर 32.8 प्रतिशत बढ़ा।



सुजुकी मोटर कॉर्पोरेशन ने बयान में कहा, 'हम (भारत में) अपने एसयूवी मॉडल के विस्तार को बढ़ावा देना जारी रखेंगे और अपनी कुल यात्री कार हिस्सेदारी हासिल करने का लक्ष्य रखेंगे।' मारुति सुजुकी वर्तमान में घरेलू बाजार में ब्रेजा, जिम्नी और ग्रैंड विटारा जैसे एसयूवी (स्पॉटर्स वूटिलिटी वाहन) मॉडल बेचती है।

### बाजार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाएगी

एसयूवी खंड में सीमित विकल्पों के कारण घरेलू यात्री वाहन खंड में कंपनी की बाजार हिस्सेदारी कुछ साल पहले के 50 प्रतिशत से घटकर करीब 42 प्रतिशत रह गई है। बाजार में एसयूवी की मांग बढ़ने के साथ कंपनी इस खंड में अपनी उपस्थिति बढ़ाने और अपनी बाजार हिस्सेदारी फिर से हासिल करने की प्रक्रिया में है।

## आर्थिक शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव का शोध

# छह वित्त वर्ष में भारत का आयात 38 फीसदी बढ़ा

एजेसी ►► नई दिल्ली

भारत का संयुक्त अरब अमीरात, दक्षिण कोरिया और ऑस्ट्रेलिया जैसे मुक्त व्यापार समझौते वाले देशों से माल का आयात वित्त वर्ष 2018-19 से 2023-24 के बीच करीब 38 प्रतिशत बढ़कर 187.92 अरब अमेरिकी डॉलर हो गया। एक रिपोर्ट में यह बात कही गई।

आर्थिक शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव के अनुसार, एफटीए भागीदारों को देश का निर्यात 2018-19 में 107.20 अरब अमेरिकी डॉलर से 2023-24 में 14.48 प्रतिशत बढ़कर 122.72 अरब अमेरिकी डॉलर हो गया। शोध संस्थान ने कहा, 'भारत का आयात वित्त वर्ष 2018-19 से 2023-24 के बीच करीब 37.97 प्रतिशत बढ़कर

आयात वित्त वर्ष 2018-19 से 2023-24 के बीच करीब 38 प्रतिशत बढ़कर 187.92 अरब अमेरिकी डॉलर



187.92 अरब अमेरिकी डॉलर हो गया। यह वृद्धि भारत की वैश्विक व्यापार गतिशीलता पर मुक्त व्यापार समझौतों के महत्वपूर्ण तथा विविध प्रभाव को दर्शाती है। आंकड़ों के अनुसार, पिछले वित्त वर्ष में संयुक्त अरब अमीरात में भारत का निर्यात 2023-24 में

18.25 प्रतिशत बढ़कर 35.63 अरब अमेरिकी डॉलर हो गया, जबकि 2018-19 में यह 30.13 अरब अमेरिकी डॉलर था। आयात वित्त वर्ष 2018-19 में 29.79 अरब अमेरिकी डॉलर से 61.21 प्रतिशत बढ़कर 48.02 अरब अमेरिकी डॉलर हो गया।

### निर्यात में विश्व स्तर पर 17वें स्थान पर भारत

भारत विश्व व्यापार में 1.8 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ निर्यात में विश्व स्तर पर 17वें स्थान पर है। आयात के मोर्चे पर वैश्विक व्यापार में 2.8 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ देश आठवें स्थान पर है। वित्त वर्ष 2023-24 में हालांकि भारत का व्यापारिक निर्यात 3.11 प्रतिशत गिरकर 437.1 अरब अमेरिकी डॉलर हो गया और आयात भी 5.4 प्रतिशत घटकर 677.2 अरब अमेरिकी डॉलर रहा। अजय श्रीवास्तव जीटीआरआई के सह-संस्थापक हैं। वह एक भारतीय व्यापार सेवा अधिकारी थे। मार्च 2022 में वीआरएस लिया। उनके पास व्यापार नीति निर्माण, डब्ल्यूटीओ और एफटीए वार्ता का अनुभव है।

## एयरटेल ग्राहकों को क्लाउड समाधान प्रदान करेगा गूगल

एजेसी ►► नई दिल्ली

भारती एयरटेल ने अपने ग्राहकों को क्लाउड समाधान प्रदान करने के लिए गूगल क्लाउड के साथ साझेदारी की है। सोमवार को संयुक्त बयान में यह जानकारी दी गई। बयान में कहा गया, दीर्घकालिक साझेदारी के तहत 'फास्ट-ट्रैक क्लाउड' अपनाने के लिए गूगल क्लाउड से क्लाउड समाधान की पेशकशी करेगा...दोनों कंपनियों के उद्योग-अग्रणी एआई/एमएल समाधान विकसित करने के लिए संपर्क तथा एआई प्रौद्योगिकी को अग्रणी और एक साथ लागू हैं। जिन्हें 300 से अधिक विशेषज्ञ हैं, जिन्हें बहू गूगल क्लाउड और डिजिटल सेवाओं दोनों में प्रशिक्षित किया जाएगा।



अधिकारी गोपाल विट्टल ने कहा, 'हम गूगल क्लाउड के साथ साझेदारी करके खुश हैं और सरकार, उद्यमों तथा उभरते व्यवसायों के लिए सुरक्षित व 'स्कैलेबल क्लाउड' समाधानों के साथ इस बाजार के अवसर का संयुक्त रूप से दोहन करेंगे।' दूरसंचार कंपनी ने पुणे में प्रबंधित सेवा केंद्र स्थापित किया है। इसमें 300 से अधिक विशेषज्ञ हैं, जिन्हें बहू गूगल क्लाउड और डिजिटल सेवाओं दोनों में प्रशिक्षित किया जाएगा।



संजीवनी टुडे

**एजेसी** ▶ देहरादून

बदरीनाथ धाम के कपाट खुलने के साथ ही चार धाम यात्रा 2024 की विधिवत शुरुआत हो गई है। इस बार चार धाम यात्रा के लिए भारी संख्या में श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। पहले दो दिनों में श्रद्धालुओं ने केदारनाथ और यमुनोत्री धाम में पहुंचने का पिछला रिकॉर्ड तोड़ दिया है। भारी संख्या में पहुंच रहे श्रद्धालुओं के कारण सरकार प्रशासन से लेकर आम तीर्थयात्रियों तक को परेशानी हो रही है। यमुनोत्री धाम में भीड़ उमड़ने के कारण हाइवे से लेकर पैदल रास्ते तक जाम जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई।

**दो दिन में उमड़ी भीड़**

केदारनाथ में इस साल 10 मई को कपाट खुलने के दिन ही 29 हजार 30 श्रद्धालु केदारनाथ में मौजूद थे। दूसरे दिन 11 मई को 22 हजार 599 श्रद्धालुओं ने दर्शन किए। यमुनोत्री में इस साल 10 मई को कपाट खुलने के दिन 12 हजार 193 और दूसरे दिन 11 मई को 8009 श्रद्धालुओं ने दर्शन किए। गंगोत्री में इस साल 10 मई को कपाट खुलने पर 2203 और दूसरे दिन 11 मई को 5203 श्रद्धालुओं ने दर्शन किए।

**उत्तराखंड चारधाम यात्रा में भक्तों की भारी भीड़**

**औसतन प्रतिदिन पंजीकरण**

- ▶ 20 हजार बदरीनाथ
- ▶ 18 हजार केदारनाथ
- ▶ 11 हजार गंगोत्री
- ▶ 09 हजार यमुनोत्री

# केदारनाथ और यमुनोत्री धाम में श्रद्धालुओं के पहुंचने का रिकॉर्ड टूटा पुलिस प्रशासन की ओर से अतिरिक्त बल तैनात, यमुनोत्री में अभी जाम

**खास बातें**

केदारनाथ में दो दिन में 51 हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने किए दर्शन

यमुनोत्री में दो दिन में 20 हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने किए दर्शन

गंगोत्री में दो दिन में 7 हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने किए दर्शन

**आठ सालों में बदरीनाथ धाम पहुंचे 78 लाख से अधिक यात्री**

बदरीनाथ की यात्रा के पिछले आठ सालों में कुल आठ लाख से अधिक यात्री आठ सालों में बदरीनाथ धाम पहुंचे। वर्ष 2016 में 654355, वर्ष 2017 में 920466, वर्ष 2018 में 1048051, वर्ष 2019 में 1244993 तथा वर्ष 2020 में 155055 श्रद्धालु बदरीनाथ पहुंचे। वर्ष 2021 में कोरोना के कारण 197997 श्रद्धालु ही पहुंचे। वर्ष 2022 में 1763549 और 2023 में रिकॉर्ड 1839591 श्रद्धालु बदरीनाथ धाम पहुंचे।

**वन-वे सिस्टम से हो रही यात्रा**

यमुनोत्री एवं गंगोत्री धाम में श्रद्धालुओं की सुविधा व सुरक्षा हेतु संकरे व संवेदनशील मार्गों पर गेट/ वन-वे सिस्टम से ट्रैफिक/यात्रा को चलाया जा रहा है। वहीं यमुनोत्री पैदल मार्ग पर घोड़े-खच्चर व डंडी-कण्डी को रोडेशन सिस्टम से चलाया जा रहा है। संकरे स्थानों पर यातायात को गेट व वन-वे सिस्टम से चलाया जा रहा है।

**जाम से निपटने के वैकल्पिक इंतजाम**

डीएम डॉ. मेहरबान सिंह बिष्ट ने कहा कि जाम से निपटने के वैकल्पिक इंतजाम किए गए हैं। हाइवे पर वाहनों की आवाजाही को नियंत्रित किया जा रहा है। भारी भीड़ वाले दिनों के लिए बनावट गप मंडेनीगाड के लगभग ढाई किलोमीटर लंबे वैकल्पिक मार्ग को भी एक तरफ से जाने के लिए खोल दिया गया है।

## निज्जर हत्या मामले में बोले जयशंकर कनाडा से अभी तक ऐसा कुछ नहीं मिला, जिसकी जांच हो

**एजेसी** ▶ मुंबई

खालिस्तानी आतंकवादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या मामले में कनाडा की तरफ से की गई चौथी गिरफ्तारी पर केंद्रीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि भारत को इस मामले में कनाडा की तरफ से अभी तक कुछ ऐसा नहीं मिला, जिसपर एजेंसी जांच कर सके। केंद्रीय मंत्री ने आगे कहा कि अगर कनाडा के पास इस मामले को लेकर किसी भी हिंसा से संबंधित जानकारी है तो भारत इसकी जांच के लिए तैयार है। एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए जयशंकर ने कहा कि हमें कनाडा की तरफ से कभी भी ऐसा कुछ नहीं मिला, जो हमारी एजेंसियों द्वारा जांचने के योग्य हो।

**कनाडा ने नहीं दिया कोई सबूत**

डॉ. एस. जयशंकर ने कहा कि हमने लंबे समय से कहा है कि अगर कनाडा में किसी भी घटना, किसी भी हिंसा का कोई सबूत है तो हम इसकी जांच करने के लिए तैयार हैं। हालांकि, भारतीय एजेंसियों द्वारा जांच किए जाने के लिए कोई सबूत कनाडा ने आज तक नहीं दिया है। उन्होंने कहा कि मैंने यह भी पढ़ा है कि इस मामले में एक और गिरफ्तारी हुई है। यदि वह व्यक्ति भारतीय नागरिक है, तो आमतौर पर कंसुलर द्वारा, आप मूल देश की सरकार या दूतावास को सूचित करते हैं।

**चौथा आरोपी गिरफ्तार**

45 वर्षीय हरदीप सिंह निज्जर की 18 जुलै 2023 में ब्रिटिश कोलंबिया के सरे में गुरुनानक सिंह गुरुद्वारा के बाहर हत्या कर दी गई थी। इस मामले में पहले तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया। इसके एक हफ्ते बाद चौथे आरोपी को भी गिरफ्तारी हो गई।

**स्कूलों में विस्फोटक लगाए जाने की धमकी**

**स्कूलों में हड़कंप, पुलिस को जांच में नहीं मिली कोई 'संदिग्ध वस्तु'**

**एजेसी** ▶ जयपुर

राजस्थान की राजधानी जयपुर के अनेक स्कूलों को सोमवार को बम से उड़ाने की धमकी ईमेल के जरिये मिली। इससे दोपहर तक पुलिस प्रशासन व अभिभावकों में हड़कंप की स्थिति मची रही। हालांकि पुलिस के अनुसार जांच में कहीं से कोई संदिग्ध वस्तु नहीं मिली है। 2008 में आज ही के दिन जयपुर में सिलसिलेवार विस्फोट हुए थे जिसमें 71 लोगों की मौत हो गई थी और 180 अन्य घायल हुए थे।

**इमेल भेजने वाले की पहचान की जा रही**

शहर के पुलिस आयुक्त बीजू जॉर्ज जोसेफ ने कहा कि पुलिस दल, बम निरोधक दस्ते और श्वान दस्ते को स्कूलों में भेजा गया। स्कूल भवनों की जांच पड़ताल की गई हालांकि कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। उन्होंने कहा कि ईमेल भेजने वाले की पहचान करने के प्रयास किए जा रहे हैं। अधिकतर स्कूलों में जांच पूरी हो चुकी है और कोई विस्फोटक नहीं मिला है।

## भारत और ईरान ने चाबहार में टर्मिनल के दीर्घकालिक परिचालन समझौते पर हस्ताक्षर किए अफगानिस्तान, मध्य एशिया और यूरोप के बाजारों तक पहुंचने के लिए मिला नया रास्ता

**भारत करेगा ईरान स्थित चाबहार पोर्ट का प्रबंधन**

**एजेसी** ▶ नई दिल्ली

भारत और ईरान ने चाबहार में स्थित शाहिद बेहश्ती बंदरगाह के टर्मिनल के परिचालन के लिए सोमवार को एक दीर्घकालिक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। ईरान स्थित भारतीय दूतावास ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर की गई पोस्ट में यह जानकारी दी।

बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्री सर्वानंद सोनोवाल की उपस्थिति में इंडिया पोर्ट्स ग्लोबल लिमिटेड और ईरान के पोर्ट्स एंड मेरिटाइम ऑर्गनाइजेशन ने अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। यह पहला मौका है जब भारत विदेश में स्थित किसी बंदरगाह का प्रबंधन अपने हाथ में लेगा।

चाबहार बंदरगाह ईरान के दक्षिणी तट पर सिस्तान-बलूचिस्तान प्रांत में स्थित है। सोनोवाल ने कहा कि भारत इस डील को लेकर इसलिए भी उत्साहित है क्योंकि इससे भारतीय सामान को अफगानिस्तान और मध्य एशिया के बाजारों तक पहुंचने के लिए एक नया रास्ता मिल गया है। यह नया रास्ता भारत की अर्थव्यवस्था को नए मुकाम पर पहुंचाएगा।

**भारतीय व्यापार के लिए नया समुद्री रास्ता खुलेगा**

**भारतीय अर्थव्यवस्था नए मुकाम पर पहुंचेगी**

**ओमान की खाड़ी से जुड़ा है चाबहार पोर्ट**

चाबहार पोर्ट ओमान की खाड़ी से जुड़ा है। यह ईरान में स्थित पहला डीपवॉटर पोर्ट है। इस ईरान को समुद्री रास्ते से बाकी देशों से जोड़ता है। चाबहार ईरान की सीमा को पाकिस्तान से नजदीक भी जोड़ता है। पाकिस्तान में भी पहले से ही वाबर् पोर्ट का निर्माण कर रहा है। चाबहार एयरपोर्ट अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे (आईएनएसटीसी) का भी हिस्सा है। यह एक मल्टी मॉडल ट्रांसपोर्टेशन प्रोजेक्ट है जो हिंद महासागर और फारस की खाड़ी को ईरान के माध्यम से कैस्पियन सागर और रूस में सेट पोर्ट्सबॉग के माध्यम से उत्तरी यूरोप तक जोड़ता है।

**नया समुद्री रास्ता खुलेगा**

सोनोवाल ने कहा कि चाबहार के शुरू होने से भारत के लिए एक नया समुद्री रास्ता खुलेगा। इससे भारत अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे में ईरान, अफगानिस्तान, आर्मेनिया, अजरबैजान, रूस, मध्य एशिया और यूरोप के साथ आसानी से व्यापार कर सकेगा। दूसरी तरफ यह तेहरान को उस समय भी समुद्री व्यापार करने में काम आएगा जब पश्चिम देश किसी तरह की पाबंदी लगाएंगे। समुद्री व्यापार के लिए अब भारत को पाकिस्तान को बायपास करना आसान होगा।

**रुस में बेलोसाउ नए रक्षा मंत्री बनाए गए**

**एजेसी** ▶ नई दिल्ली

भारत-फ्रांस संयुक्त सैन्य अभ्यास शक्ति मेघालय में शुरू

भारत और फ्रांस के बीच अभ्यास शक्ति का सातवां संस्करण घालय में शुरू हुआ, जिसका उद्देश्य विविध क्षेत्र में अभियान के लिए दोनों पक्षों की संयुक्त सैन्य क्षमता को बढ़ाना है। रक्षा मंत्रालय ने यह जानकारी दी। मंत्रालय ने कहा कि संयुक्त सैन्य अभ्यास का लक्ष्य दोनों मित्र देशों के बीच रक्षा सहयोग और उनके द्विपक्षीय संबंधों को भी बढ़ावा देना है। 13-26 मई तक आयोजित होने वाला शक्ति अभ्यास दोनों पक्षों को संयुक्त अभियान चलाने की रणनीति साझा करने में सक्षम बनाएगा।

**रक्षा सहयोग के साथ द्विपक्षीय संबंधों को भी मिलेगा बढ़ावा**

**द्विपक्षीय प्रशिक्षण कार्यक्रम**

अभ्यास शक्ति एक द्विपक्षीय प्रशिक्षण कार्यक्रम है जो बायीं-बायीं से भारत और फ्रांस में आयोजित किया जाता है। इसका पिछला संस्करण नवंबर 2021 में फ्रांस में आयोजित किया गया था।

**राजपूत रेजिमेंट कर रही प्रतिनिधित्व**

भारत की 90 कर्मियों वाली टुकड़ी का प्रतिनिधित्व मुख्य रूप से राजपूत रेजिमेंट की एक बटालियन के अलावा अन्य टुकड़ियों और सेवाओं के कर्मियों द्वारा किया जा रहा है। भारतीय लोडिंग और भारतीय वायु सेना के पर्यवेक्षक भी इस अभ्यास का एक हिस्सा बनेंगे। बयान में कहा गया है कि 90 कर्मियों वाली फ्रांसीसी टुकड़ी का प्रतिनिधित्व मुख्य रूप से 13वीं फॉरन लैंडियन हाफ-ब्रिगेड (13वीं डीबीएलई) के कर्मियों द्वारा किया जाएगा। संयुक्त अभ्यास में अहड़-शहरी और पर्वतीय इलाकों में अभियान पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

**करोड़ों की सोने की चोरी करने वाला गिरफ्तार**

ओटावा। कनाडा में टोरंटो के मुख्य एयरपोर्ट पर भारतीय मूल के 36 वर्षीय शख्स अर्चित ग्रेवर को करोड़ों डॉलर के सोने की चोरी के मामले में गिरफ्तार किया है। पुलिस ने बताया कि 17 अप्रैल, 2023 को उस कंटेनर को नकली कागजी कार्रवाई का उपयोग करके एक गोदाम से चुरा लिया गया था। इस कंटेनर में दो करोड़ 20 लाख कनाडाई डॉलर से अधिक मूल्य की सोने की छड़ें और विदेशी मुद्रा थी। देश के इतिहास की सबसे बड़ी चोरी के इस मामले में करीब एक महीने पहले भी पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया था।

**पीओके में चौथे दिन हड़ताल जारी, एक पुलिस अधिकारी की मौत तंगहाल पाकिस्तान देगा 718 करोड़ की ग्रांट**

**एजेसी** ▶ इस्लामाबाद

पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में चल रहे प्रदर्शनों के बीच सोमवार को पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने उच्चस्तरीय बैठक की। बैठक में पीओके की पीएम अनवारुल हक, पीएमएल-पन के नेता फारुख हदद, कश्मीर मामलों के मंत्री अमीर मुकाम और कई प्रमुख राजनेता शामिल हुए। बैठक में पीओके के खराब हालातों पर चर्चा हुई। इसके बाद पीएम शरीफ ने पीओके के लिए 23 अरब पाकिस्तानी रुपए ( 718 करोड़ हिंदुस्तानी रुपए) की ग्रांट की घोषणा की है।

**हिसक झड़पें हुईं**

पीओके में गेट के आटे, बिजली की ऊंची कीमती और अधिक कर के खिलाफ शुरू की गई पूर्ण हड़ताल सोमवार को चौथे दिन भी जारी रही, जिससे पूरे क्षेत्र में स्थिति तनावपूर्ण बनी हुई है। वहीं, सुरक्षाबलों और प्रदर्शनकारियों के बीच हुई हिंसक झड़पें हुईं।

**दर्जन लोग गिरफ्तार**

मुजफ्फराबाद क्षेत्र में बाजार, व्यापार केंद्र, कार्यालय स्कूल और रेस्तरां बंद रहे। विभिन्न स्थानों में हिंसा होने के बाद पुलिस ने प्रदर्शनकारियों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए मुजफ्फराबाद में दर्जनों लोगों को गिरफ्तार किया। नोबलफोन और इंटरनेट सेवाएं भी बंद कर दी थीं।

**मुठभेड़ में तीन नक्सली मारे गए**

गढ़चिरोली। महाराष्ट्र के गढ़चिरोली जिले में सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में तीन नक्सली मारे गए जिनमें दो महिलाएं हैं। पुलिस अधीक्षक नीलोत्पल ने कहा कि खुफिया सूचना प्राप्त हुई थी कि नक्सलियों ने पेरिमिटर दलम के कुछ सदस्य अपने 'टैक्टिकल काउंटर ऑपरेशन कैम्प' (टीसीओसी) अर्थात् के दौरान साजिश को अंजाम देने के उद्देश्य से भामरागढ़ तालुका के कटरागढ़ गांव के पास एक जंगल में जमा हुए हैं। विशेष दस्ते सी-60 कमांडो को दो इकाइयों ने कार्रवाई की।

**भारत ने तनाव के बावजूद मालदीव को की मदद 50 मिलियन अमेरिकी डॉलर मिलने पर विदेश मंत्री ने शुक्रिया अदा किया**

**एजेसी** ▶ ममाले

मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू की चीन प्रेमी सोच के बावजूद भारत ने माले को 50 मिलियन अमेरिकी डॉलर की ट्रेजरी बिल मदद की है। भारत ने यह निर्णय मालदीव के विदेश मंत्री मूसा जमीर के नई दिल्ली यात्रा के दौरान उनके अनुरोध पर किया।

मालदीव ने इसके लिए भारत का शुक्रिया किया है। भारत ने हमेशा की तरह दिल खोलकर मालदीव की मदद करके पड़ोस प्रथम की भावना को सही साबित किया है। मालदीव के विदेश मंत्री मूसा जमीर ने अपने एक्स पोस्ट पर लिखा कि मैं विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर और भारत सरकार को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने 50 मिलियन अमेरिकी डॉलर के ट्रेजरी बिल के रोलओवर के साथ मालदीव को महत्वपूर्ण बजटीय सहायता दी है। यह दोनों देशों के बीच सद्भावना का सच्चा संकेत है जो मालदीव और भारत के बीच दीर्घकालिक मित्रता का प्रतीक है। इस सहायता से मालदीव में बढ़ी संख्या में ढांचागत विकास परियोजनाएं और उच्च प्रभाव सामुदायिक विकास परियोजनाएं चल रही हैं। इसमें अनुदान सहायता के रूप में भी भारत का एक उल्लेखनीय हिस्सा शामिल है।

**मालदीव ने जारी की अधिसूचना**

विदेश मंत्री जमीर ने अपने विदेश मंत्रालय की उस अधिसूचना को भी साझा किया है, जो उसकी वेबसाइट पर जारी की गई है। मालदीव के विदेश मंत्रालय ने लिखा है कि भारत सरकार ने आज मालदीव को 50 मिलियन अमेरिकी डॉलर की बजट सहायता प्रदान की है। यह सहायता 13 मई 2024 से भारतीय स्टेट बैंक माले के माध्यम से मिली है। इसके तहत 50 मिलियन अमेरिकी डॉलर के ट्रेजरी बिल के रोलओवर के रूप में एक अतिरिक्त वर्षों के लिए सहायता मिली है।

**दिल्ली यात्रा के दौरान किया था अनुरोध, ट्रेजरी बिल के रोलओवर के रूप में मिली सहायता, ढांचागत विकास परियोजनाओं में उपयोग की जाएगी राशि**

**भारतीय विमानों को उड़ाने के लिए सैनिक नहीं**

मालदीव के रक्षा मंत्री धारुन मौनुन ने माना है कि मालदीव राष्ट्रीय रक्षा बल (एमएनडीएफ) में कोई भी ऐसा सैनिक नहीं है जो भारतीय सेना द्वारा बांध किए गए तीन विमानों का संचालन कर सके। कुछ सैनिकों को पिछली सरकारों के समझौतों के तहत उन्हें उड़ाने का प्रशिक्षण दिया गया था। लेकिन यह ऐसे प्रशिक्षण था जिसमें विभिन्न चरणों को पार करने की जरूरत होती थी। हमारे सैनिक विभिन्न कारणों से इन चरणों को पूरा न कर सके। इसलिए इस समय हमारे बल में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसके पास दो हेलीकॉप्टर और डोमिनियन विमान को उड़ाने का लाइसेंस हो।

**100 के नए नोट पर टिप्पणी मामला नेपाल के राष्ट्रपति के आर्थिक सलाहकार ने दिया इस्तीफा**

**एजेसी** ▶ काठमांडू

नेपाल के राष्ट्रपति राम चंद्र पौडेल के आर्थिक सलाहकार ने तीन भारतीय क्षेत्रों को दर्शाने वाले 100 रुपए के नए नोट जारी करने के सरकार के फैसले पर अपनी विवादास्पद टिप्पणी के बाद इस्तीफा दे दिया है। राष्ट्रपति कार्यालय द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञापन के अनुसार, राष्ट्रपति ने चिरंजीवी नेपाल के इस्तीफे को रिवार को मंजूरी कर लिया।

चिरंजीवी ने कहा कि इस्तीफा मैंने, उन कुछ ऑनलाइन समवाह पोर्टल द्वारा की गई कौशिक का नैतिक दायित्व लेते हुए इस्तीफा दिया है, जिन्होंने मेरे बयान के आधार पर राष्ट्रपति को विवाद में शामिल करने का प्रयास किया। उन्होंने स्वरूप दिया कि बयान में मेरा इरादा एक सजग नागरिक के रूप में लोगों को इस बात से अवगत करना था कि इस तरह का कृत्य देश एवं लोगों के लिए ऐसे वक्त में व्यावहारिक सम्मर्याद पैदा कर सकता है, जब (लक्ष्मण के मुँह पर) राजनयिक स्तर पर बातचीत की जा रही है।